ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष ६२ अंक ५ जनवरी २०१५ माघ २०७१ वार्षिक मूल्य १५० रु०

सुभाषचन्द्र बोस
२३ जनवरी १८९७ जन्मदिन

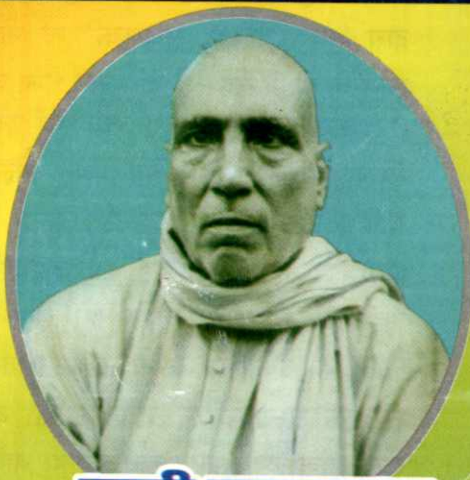

स्वामी स्वतन्त्रानन्द
५ जनवरी जन्मदिन

लाल बहादुर शास्त्री
११ जनवरी १९६६ निधन दिवस

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल

सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० राहुल आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क १५० रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क १५०० रुपये है।
2. यदि सुधारक २० तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुन: भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा '**व्यवस्थापक सुधारक**' के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष : ६२ | अंक : ५

जनवरी २०१५ | विक्रमाब्द २०७१

दयानन्दाब्द १९० | कलिसंवत् ५११५

सृष्टिसंवत्-१,९६,०८,५३,११५

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
१.	आर्याभिविनय:	१
२.	क्या गीता राष्ट्रीय ग्रंथ के योग्य है ?	२
३.	लाल बहादुर शास्त्री : एक परिचय	४
४.	फांसी के दिन	८
५.	गणतन्त्र दिवस भारत का एक राष्ट्रीय पर्व	१३
६.	शोषित होती भावना	१४
७.	लोहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी	१५
८.	एक भेंट स्वामी दयानन्द से	१७
९.	भारत पाक युद्ध १९७१ के अनुभव	२१
१०.	नेता जी सुभाषचन्द्र बोस	२३
११.	समाचार प्रभाग	२४

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

आर्याभिविनयः

स्तुति विषय

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिरीड्यो नूतनैरुत।
स देवाँ एह वक्षति ॥ ४॥

ऋ० १।१।१।२॥

व्याख्यान — [**(अग्निः)**] हे सब मनुष्यों के स्तुति करने योग्य ईश्वराग्ने! **(पूर्वेभिः)** विद्या पढ़े हुए प्राचीन **(ऋषिभिः)** मन्त्रार्थ देखनेवाले विद्वान् तथा **(नूतनैः)** वेदार्थ पढ़नेवाले नवीन ब्रह्मचारियों से **(ईड्यः)** स्तुति के योग्य, **(उत)** और [**(नूतनैः)**] जो हम लोग (=मनुष्य) विद्वान् वा मूर्ख हैं, उनसे भी अवश्य आप ही स्तुति के योग्य हो। [**(स""""वक्षति)**] सो स्तुति को प्राप्त हुए आप हमारे और सब संसार के सुख के लिए दिव्यगुण अर्थात् विद्यादि को कृपा से प्राप्त करो, आप ही सबके इष्टदेव हो ॥ ४॥

स्तुति-विषय

अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः।
देवो देवेभिरा गमत् ॥ ५॥

ऋ० १।१।१।५॥

व्याख्यान — [**(कविः)**] हे सर्वदृक्=सबको देखनेवाले! **(क्रतुः)** सब जगत् के जनक, **(सत्यः)** अविनाशी अर्थात् कभी जिनका नाश नहीं होता, **(चित्रश्रवस्तमः)** आश्चर्य-श्रवणादि, आश्चर्यगुण, आश्चर्यशक्ति, आश्चर्यरूपवान् और अत्यन्त उत्तम आप हो। जिन आपके तुल्य वा आप से बड़ा कोई नहीं है। [**(देवः)**] हे जगदीश! **(देवेभिः)** दिव्य गुणोंके सह प्रकाशित हों। जिससे हम और हमारा राज्य दिव्यगुणयुक्त हो। वह राज्य आपका ही है, हम तो केवल आपके पुत्र तथा भृत्यवत् हैं ॥ ५॥

प्रार्थना-विषय

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत्सत्यमङ्गिरः ॥ ६॥ ऋ० १।१।२।१॥[१]

व्याख्यान- हे **(अङ्ग)** मित्र! [**(दाशुषे)**] जो आपको आत्मादि दान करता है, उसको **(भद्रम्)** व्याहारिक और पारमार्थिक सुख [**(करिष्यसि)**] अवश्य देते हो, हे **(अङ्गिरः)** प्राणप्रिय! [**(तवेत्तत्सत्यम्)**] यह आपका सत्यव्रत है कि स्वभक्तों को परमानन्द देना। यही आपका स्वभाव हमको अत्यन्त सुखकारक है। आप मुझको ऐहिक और परमार्थिक इन दोनों सुखों का दान शीघ्र दीजिये। जिससे सब दुःख दूर हों, हमको सदा सुख ही रहे ॥ ६॥

स्तुति-विषय

वायवा याहि दर्शतेमे सोमा अरंकृताः।
तेषां पाहि श्रुधी हवम् ॥ ७॥ ऋ१।१।३।१॥

व्याख्यान- [**(वायवा याहि दर्शत)**] हे अनन्तबल परेश वायो दर्शनीय! आप अपनी कृपा से ही हमको प्राप्त हो [**(इमे सोमाः)**] हम लोगों ने अपनी अल्पशक्ति से सोम (=सोमवल्यादि) ओषधियों का उत्तम रस सम्पादन किया है और जो कुछ भी हमारे श्रेष्ठ पदार्थ हैं, वे आपके लिए **(अरङ्कृताः)** अलङ्कृत अर्थात् उत्तम रीति से हमने बनाये हैं। वे सब आपके समर्पण किये गये हैं। [**(तेषां पाहि)**] उनको आप स्वीकार करो (=सर्वात्मा से पान करो)। हम दीनों की दीनता सुनकर जैसे पिता को पुत्र छोटी चीज समर्पण करता है, उस पर पिता अत्यन्त प्रसन्न होता है, वैसे आप हम पर प्रसन्न होओ ॥ ७॥

(—आर्याभिविनय से)

सम्पादकीय.... क्या गीता राष्ट्रीय ग्रंथ के योग्य है?

भारत में जैसे अशोककालीन सिंहशीर्ष स्तम्भ राष्ट्रीय चिह्न है, सिंह राष्ट्रीय पशु और मोर राष्ट्रीय पक्षी घोषित है इसी प्रकार गीता को राष्ट्रीय ग्रंथ घोषित करने की चर्चा हो रही है। इस ग्रंथ को इतना महत्त्व दिया जाना मेरे विचार से उपयुक्त नहीं है। एक तो यह कि यह कोई स्वतन्त्र ग्रंथ नहीं है, किन्तु महाभारत ग्रंथ का १४३वां भाग है। जैसे किसी व्यक्ति को महत्ता न देकर उसके किसी अंग विशेष को सर्वोच्च स्थान देकर उसे महिमामण्डित किया जाये, उसी प्रकार महाभारत की उपेक्षा करके उसके एक सामान्य अंग को विशेष महत्त्व दिया जाना अनुपमुक्त है। इससे अधिक महत्त्वूपर्ण महाभारत ग्रंथ के विदुर प्रजागर और भीष्म की नीति है, जिन के आधार पर मानव और राष्ट्र को उन्नति के उच्चशिखर पर आरूढ़ किया जा सकता है।

गीता का सार यह है कि अर्जुन को युद्ध भूमि में अपने पारिवारिकजनों को सामने खड़ा देखकर कि इनसे युद्ध करना होगा, इन्हें मारना होगा यह विचात कर मोह उत्पन्न होगया और वह युद्ध से विरान होने लगा था। श्रीकृष्ण जी ने उसे उसका कर्त्तव्य समझाकर युद्ध के लिए तैयार कर दिया और पाण्डवों को विजय दिलवादी। इससे अतिरिक्त गीता में जो कुछ है वह युद्ध के वातावरण से सर्वथा असम्बद्ध है। जब दोनों पक्षों की सेनायें युद्ध के लिए तैयार खड़ी हों उस समय सात सौ श्लोकों से युक्त ग्रंथ का भाषण देना वैसे भी अनुपयुक्त और असम्भव है। अत: इस ग्रंथ को अनावश्यक महत्त्व नहीं देना चाहिये। आजकल न्यायाधीश साक्षी को गीता की सौगन्द दिलाकर या उस पर हाथ रख कर सत्य बात कहने के लिए प्रेरित करता है। जब गीता नहीं थी, तब के न्यायाधीश क्या करते होंगे, यह भी कभी विचार किया है?

प्राय: सारा संसार मानता है कि ऋग्वेद संसार के पुस्तकालय में सबसे प्राचीन ग्रंथ है, इसके भीतर जो ज्ञान है, उसकी बराबरी संसार का कोई भी ग्रंथ नहीं कर सकता। यदि किसी ग्रंथ को राष्ट्रीय ग्रंथ घोषित करना ही हो तो ऋग्वेद को करना चाहिये। वैसे तो चारों वेद ही एकमात्र ऐसे हैं जो राष्ट्रीय ग्रंथ के रूप में मान्यता प्राप्त करने के योग्य हैं। किन्तु मध्यकालीन संस्कृत के विद्वान् गीता और उपनिषदों से आगे नहीं बढ़ पाए थे इसीलिए शंकराचार्य आदि ने गीता को महत्त्व दिया और वही अन्ध परम्परा अभी तक प्रचलित है, इसमें सुधार होना चाहिए।

राष्ट्रभक्त कौन है?

गत दिनों श्री साक्षी महाराज ने नत्थूराम गोडसे को राष्ट्रभक्त कह दिया तो बवण्डर खड़ा होगया। राष्ट्रभक्त वह होता है, जो देश को, राष्ट्र को हानि पहुंचाने वाला तत्त्व हो उसे दूर करके राष्ट्र का देश का भला कर सके।

मोहनदास कर्मचन्द गांधी का और नत्थूराम गोडसे का व्यक्तिगत कोई परस्पर वैमनय, द्वेष आदि नहीं था। गांधी जी की नीति यह थी कि मुसलमानों को सन्तुष्ट करो, हिन्दुओं को दबाओ। इसी राष्ट्रघाती नीति के कारण पाकिस्तान बना, लाखों हिन्दुओं का संहार हुआ, बहनों से बलात्कार हुए, मातायें विधवा हुईं, बच्चे अनाथ होगये, लाखों लोग बेघर होगये। उस भयंकर ताण्डव नृत्य को देखनेवाले और उसके दुष्परिणाम को भोगनेवाले आज भी हजारों लोग जीवित हैं।

भारत सरकार पर अपना व्यक्तिगत दबाव डलवाकर पचपन करोड़ रुपया पाकिस्तान को गांधी जी ने दिलवाया। परिणामत: नंगे भूखे पाकिस्तान ने भारत पर तुरन्त आक्रमण कर दिया। हिन्दू मुस्लिम दोनों संस्कृतियाँ परस्पर विरुद्ध हैं। मुसलमानों को पृथक् देश चाहिये था, वह मिल गया। होना तो यह चाहिये था कि शान्तिपूर्वक दोनों समुदाय अपने-अपने स्थान पर चले जायें। परन्तु जो मुसलमान मेवात से पाकिस्तान जाना चाहते थे, उन्हें गांधी जी

ने घासेड़ा में अनशन करके जाने से रोक दिया। आज वही क्षेत्र सिर दर्द बना हुआ है, हिन्दुओं के साथ, गोमाता के साथ जो दुर्व्यवहार और अत्याचार वहां होता है, वह पाकिस्तान में रहनेवाले हिन्दुओं के साथ होने वाले व्यवहार जैसा ही है।

इस प्रकार की देशघातक घटनाओं के कारण ही नत्थूराम गोडसे देश को बचाने के लिए चिन्तित था। सभी प्रकार के बिन्दुओं को सोच-समझ-परख कर उसने यह निश्चय किया कि इस सारे घटनाक्रम के मूल में गांधी जी का विशेष योगदान है, यदि ये रहे तो देश की और अधिक हानि होती रहेगी। यह उसके **'गांधी वध क्यों ?'** इस ग्रंथ में सप्रमाण दर्शित है। इसीलिये देशहित में गोडसे ने यह कदम उठाया। ऐसे व्यक्ति को हत्यारा तो कह सकते हैं, परन्तु उसकी देशभक्ति में कोई न्यूनता नहीं है, इसलिए साक्षी महाराज ने नत्थूराम गोडसे को यदि देशभक्त कह दिया तो मेरे विचार से कोई गलत नहीं कहा।

वैसे व्यक्ति स्वतन्त्र है, किसी के प्रति आस्था रक्खे, या वैमनस्य रक्खे, परन्तु उससे राष्ट्र को कितनी हानि या लाभ है, यह भी विचार कर लेना चाहिए।

गांधी जी की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति आज भारत में क्या गुल खिला रही है, यह सारा देश जानता है। देश में जहां भी आतंकवाद या झगड़ा फैलता है, वह किसके द्वारा होता है। इसे दूरदर्शन पर समाचार सुनने वाले और समाचारपत्र पढ़ने वाले सभी जानते हैं। यदि पाकिस्तान बनते समय सभी मुसलमान पाकिस्तान में चले जाते तो भारत में आतंकवाद की इतनी घटनायें नहीं घट पाती जितनी आज घट रही हैं। अब तो सरकार को बाहर भीतर दोनों ओर से सुलटना पड़ रहा है। उस परिस्थिति में केवल बाहर से ही सावधान रहना पड़ता।

वोट की राजनीति ऐसी विकट और स्वार्थमयी है कि सब जानते-बूझते हुए भी देश के प्रति अनास्था रखने वालों को भी सन्तुष्ट करना पड़ रहा है, जिससे इनके मत की सहायता से हमें राजपाट का सुख मिलता रहे। परन्तु भारत, भारतीयता, भारतीय संस्कृति, सभ्यता, भाषा आदि के लिए यह सब बहुत महंगा पड़ रहा है। राष्ट्रभक्त देश के करणधारों को इस ओर विशेष ध्यान देना होगा, नहीं तो जैसे पाकिस्तान में सैकड़ों बच्चों की हत्या हुई है, यहां भी उसकी आवृत्ति होने की सम्भावना बनी रहती है। ईश्वर हमारे देश के नेताओं को सद्बुद्धि दे, जिससे एक संस्कृति, एक भाषा, एक सभ्यता, एक खान-पान की भारतीय संस्कृति सुरक्षित रह सके।

नत्थूराम गोडसे को दोष देने से पहले पाठकों को निम्नलिखित ग्रंथों का अध्ययन कर लेना चाहिए।

१. गांधी वध क्यों ? लेखक- नत्थूराम गोडसे
२. गांधीवध और मैं लेखक- गोपाल गोडसे (नत्थूराम का भाई)
३. भारत गांधी नेहरू की छाया में लेखक-गुरुदत्त उपन्यासकार
४. देश की हत्या लेखक-गुरुदत्त उपन्यासकार
५. गांधी बेनकाब लेखक- हंसराज रहबर

इतिहास को छुपाना या अशुद्धरूप में प्रस्तुत करके जनता को धोखे में रखना इतिहास के साथ खिलवाड़ करना है। मोहनदास कर्मचन्द गांधी को राष्ट्रपिता एक पार्टी विशेष ने अपने स्वार्थपूर्ति हेतु प्रसिद्ध कर दिया था। इसी को जनता में स्थापित करने हेतु सरकार ने भी बीस पैसेके सिक्के से लेकर एक हजार के नोट पर चित्रित कर दिया। क्या देश में और कोई महापुरुष ऐसा नहीं हुआ जो इस पद के योग्य होता। यह तभी सम्भव हो पाया है जब सामान्यजनता सच्चाई से अवगत नहीं हो पाई।

आज जनता जागरूक होगई है, इसे सुभाषचन्द्र बोस की मृत्यु सम्बन्धी जानकारी भी चाहिये। नत्थूराम गोडसे के न्यायालय में दिये गये बयान को भी सार्वजनिक किया जाना चाहिए। जनता को अन्धेरे में रखने से लम्बे समय तक इतिहास को छुपाया नहीं जायेगा। आशा है सरकार को सद्बुद्धि आयेगी और वह जनता को सच्चाई से अवगत कराकर अपने कर्त्तव्य को पूरा करेगी।

— विरजानन्द दैवकरणि

लाल बहादुर शास्त्री : एक परिचय

O नन्दलाल शास्त्री, गुरुकुल झज्जर

लालबहादुर शास्त्री (जन्म : २ अक्तूबर १९०४ मुगलसराय - मृत्यु : ११ जनवरी १९६६ ताशकन्द), भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री थे। वह ९ जून १९६४ से ११ जनवरी १९६६ को अपनी मृत्युपर्यन्त लगभग अठारह महीने भारत के प्रधानमंत्री रहे। इस प्रमुख पद पर उनका कार्यकाल अद्वितीय रहा।

भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् शास्त्री जी को **उत्तरप्रदेश** के संसदीय सचिव के रूप में नियुक्त किया गया था। **गोविंद वल्लभ पंत** के मन्त्रिमण्डल में उन्हें पुलिस एवं परिवहन मन्त्रालय सौंपा गया। परिवहन मंत्री के कार्यकाल में उन्होंने प्रथम बार महिला संवाहकों (कण्डक्टर्स) की नियुक्ति की थी। पुलिस मंत्री होने के बाद उन्होंने भीड़ को नियन्त्रण में रखने के लिए लाठी की जगह पानी की बौछार का प्रयोग प्रारम्भ कराया। **१९५१** में, जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में वह अखिल भारत काँग्रेस कमेटी के महासचिव नियुक्त किये गये। उन्होंने **१९५२, १९५७ व १९६२** के चुनावों में कांग्रेस पार्टी को भारी बहुमत से जिताने के लिए बहुत परिश्रम किया।

प्रधानमंत्री रहते हुए ही **जवाहरलाल नेहरू** का २७ मई, १९६४ को देहावसान हो जाने के बाद साफ सुथरी छवि के कारण शास्त्री जी को १९६४ में देश का प्रधानमंत्री बनाया गया। उन्होंने ९ जून १९६४ को भारत के प्रधानमंत्री का पद भार ग्रहण किया।

उनके शासनकाल में १९६५ का **भारत-पाक युद्ध** शुरू हो गया। इससे तीन वर्ष पूर्व **चीन** का युद्ध **भारत** हार चुका था। शास्त्रीजी ने अप्रत्याशित रूप से हुए इस युद्ध में नेहरू के मुकाबले राष्ट्र को उत्तम नेतृत्व प्रदान किया और पाकिस्तान को करारी शिकस्त दी।

ताशकन्द में पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के साथ युद्ध समाप्त करने के समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद ११ जनवरी १९६६ की रात में ही रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गयी। उनकी सादगी, देशभक्ति और ईमानदारी के लिए मरणोपरान्त भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

संक्षिप्त जीवनी — लालबहादुर शास्त्री का जनम २ अक्तूबर १९०४ को मुगलसराय (उत्तरप्रदेश) में मुंशी शारदा प्रसाद श्रीवास्तव के यहाँ हुआ था। उनके पिता प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक थे अत: सब उन्हें मुंशी जी ही कहते थे। बाद में उन्होंने राजस्व विभाग में लिपिक (क्लर्क) की नौकरी कर ली थी। लालबहादुर की माँ का नाम रामदुलारी था। परिवार में सबसे छोटा होने के कारण बालक लालबहादुर को परिवार वाले प्यार में नन्हें कहकर ही बुलाया करते थे। जब नन्हें अठारह महीने का हुआ दुर्भाग्य से पिता का निधन हो गया। उसकी माँ रामदुलारी अपने पिता हजारीलाल के घर मिर्जापुर चली गयी। कुछ समय बाद उसके नाना भी नहीं रहे। बिना पिता के बालक नन्हें की परवरिश करने में उसके मौसा रघुनाथ प्रसाद ने उसकी माँ का बहुत सहयोग किया। ननिहाल में रहते हुए उसने प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। उसके बाद की शिक्षा हरिश्चन्द्र हाई स्कूल और काशी विद्यापीठ में हुई। काशी विद्यापीठ से शास्त्री की उपाधि मिलते ही प्रबुद्ध बालक ने जन्म से चला आ रहा जातिसूचक शब्द श्रीवास्तव हमेशा हमेशा के लिये हटा दिया और अपने नाम के आगे 'शास्त्री' लगा लिया। इसके पश्चात् शास्त्री शब्द लाल बहादुर के नाम का पर्याय ही बन गया।

१९२८ में उनका विवाह मिर्जापुर निवासी गणेशप्रसाद की पुत्री ललिता से हुआ। ललिता शास्त्री से उनके छः सन्तानें हुईं, दो पुत्रियाँ-कुसुम व सुमन और चार पुत्र-हरिकृष्ण, अनिल, सुनील व अशोक। उनके चार पुत्रों में से दो अनिल शास्त्री और सुनील शास्त्री अभी हैं, शेष दो दिवंगत हे चुके हैं। अनिल शास्त्री कांग्रेस पार्टी के एक वरिष्ठ नेता हैं जबकि सुनील शास्त्री भारतीय जनता पार्टी में चले गये।

राजनीतिक जीवन — 'मरो नहीं, मारो!' का नारा लालबहादुर शास्त्री ने दिया जिसने क्रान्ति को पूरे देश में प्रचण्ड किया।

संस्कृत भाषा में स्नातक स्तर तक की शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् वे भारत सेवक संघ से जुड़ गये और देशसेवा का व्रत लेते हुए यहीं से अपने राजनैतिक जीवन की शुरूआत की। शास्त्री जी सच्चे गांधीवादी थे जिन्होंने अपना सारा जीवन सादगी से बिताया और उसे गरीबों की सेवा में लगाया। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सभी महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों व आन्दोलनों में उनकी सक्रिय भागीदारी रही और उसके परिणामस्व रूप उन्हें कई बार जेलों में भी रहना पड़ा। स्वाधीनता संग्राम के जिन आन्दोलनों में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही उनमें १९२१ का सहयोग आंदोलन, १९३० का दांडी मार्च तथा १९४२ का भारत छोड़ो आन्दोलन उल्लेखनीय हैं।

दूसरे विश्व युद्ध में इंग्लैण्ड को बुरी तरह उलझता देख जैसे ही नेताजी ने आजाद हिन्द फौज को दिल्ली चलो का नारा दिया, गांधी जी ने मौके की नजाकत को भाँपते हुए ८ अगस्त १९४२ की रात में ही मुम्बई से अंग्रेजों को 'भारत छोड़ो' व भारतीयों को 'करो या मरो' का आदेश जारी किया और सरकारी सुरक्षा में यरवदा पुणे स्थित आगा खान पैलेस में चले गये। ९ अगस्त १९४२ के दिन शास्त्रीजी ने इलाहाबाद पहुंचकर इस आन्दोलन के गांधीवादी नारे को चतुराई पूर्वक "**मरो नहीं, मारो!**" में बदल दिया और अप्रत्याशित रूप से क्रान्ति की दावानल को पूरे देश में प्रचण्ड रूप दे दिया। पूरे ग्यारह दिन तक भूमिगत रहते हुए यह आन्दोलन चलाने के बाद १९ अगस्त १९४२ को शास्त्रीजी गिरफ्तार हो गये।

शास्त्रीजी के राजनीतिक दिग्दर्शकों में पुरुषोत्तमदास टंडन और पण्डित गोविन्द वल्लभपंत के अतिरिक्त जवाहरलाल नेहरू भी शामिल थे। सबसे पहले १९२९ में इलाहाबाद आने के बाद उन्होंने टण्डन जी के साथ भारत सेवक संघ की इलाहाबाद इकाई के सचिव के रूप में काम करना शुरू किया। इलाहाबाद में रहते हुए ही नेहरूजी के साथ उनकी निकटता बढ़ी। इसके बाद तो शास्त्री जी का पद निरन्तर बढ़ता ही चला गया और एक के बाद एक सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए वे नेहरू जी के मंत्रिमण्डल में रेलमंत्री और गृहमंत्री के प्रमुख पद तक जा पहुँचे और इतना ही नहीं, नेहरू के निधन के पश्चात् भारतवर्ष के प्रधानमंत्री भी बने।

प्रधानमंत्री — उनकी साफ सुथरी छवि के कारण ही उन्हें १९६४ में देश का प्रधानमंत्री बनाया गया। उन्होंने अपने प्रथम संवाददाता सम्मेलन में कहा था कि उनकी शीर्ष प्राथमिकता खाद्यान्न मूल्यों को बढ़ने से रोकना है और वे ऐसा करने में सफल भी रहे। उनके क्रियाकलाप सैद्धान्तिक न होकर पूर्णतः व्यावहारिक और जनता की आवश्यकताओं के अनुरूप थे।

निष्पक्ष रूप से यदि देखा जाये तो शास्त्रीजी का शासन काल बेहद कठिन रहा। पूंजीपति देश पर हावी होना चाहते थे और दुश्मन देश हम पर आक्रमण करने की फिराक में थे। १९६५ में अचानक पाकिस्तान ने भारत पर सायं ७.३० बजे हवाई हमला कर दिया। परम्परानुसार राष्ट्रपति ने आपात बैठक

बुला ली जिसमें तीनों रक्षा अंगों के प्रमुख व मन्त्रिमण्डल के सदस्य शामिल थे। संयोग से प्रधानमंत्री उस बैठक में कुछ देर से पहुँचे। उनके आते ही विचार-विमर्श प्रारम्भ हुआ। तीनों प्रमुखों ने सारी वस्तुस्थिति समझाते हुए उनसे पूछा 'सर! क्या हुकम है?' शास्त्री जी ने एक वाक्य में तत्काल उत्तर दिया- 'आप देश की रक्षा कीजिये और मुझे बताइये कि हमें क्या करना है?'

शास्त्री जी ने इस युद्ध में नेहरू के मुकाबले राष्ट्र को उत्तम नेतृत्व प्रदान किया और जय जवान-जय किसान का नारा दिया। इससे भारत की जनता का मनोबल बढ़ा और सारा देश एकजुट हो गया। इसकी कल्पना पाकिस्तान ने कभी स्वप्न में भी नहीं की थी। बिग्रेडियर हरीसिंह, जो उस समय प्रथम भारतीय बख्तरबंद डिविजन की १८वीं यूनिट में सैनिक थे, लाहौर (पाकिस्तान) में बरकी पुलिस थाने के बाहर तैनात किया गया।

भारत पाक युद्ध के दौरान ६ सितम्बर को भारत की १५वीं पैदल सैन्य इकाई ने द्वितीय विश्व युद्ध के अनुभवी मेजर जनरल प्रसाद के नेतृत्व में इच्छोगिल नहर के पश्चिमी किनारे पर पाकिस्तान के बहुत बड़े हमले का डटकर मुकाबला किया। इच्छोगिल नहर भारत और पाकिस्तान की वास्तविक सीमा थी। इस हमले में खुद मेजर जनरल प्रसाद के काफिले पर भी भीषण हमला हुआ और उन्हें अपना वाहन छोड़कर पीछे हटना पड़ा। भारतीय थलसेना ने दूनी शक्ति से प्रत्याक्रमण करके बरकी गाँव के समीप नहर को पार करने में सफलता अर्जित की। इससे भारतीय सेना लाहौर के हवाई अड्डे पर हमला करने की सीमा के भीतर पहुँच गयी। इस अप्रत्याशित आक्रमण से घबराकर अमेरिका ने अपने नागरिकों को लाहौर से निकालने के लिए कुछ समय के लिए युद्धविराम की अपील की।

आखिरकार रूस और अमेरिका की मिलीभगत से शास्त्रीजी पर जोर डाला गया। उन्हें एक सोची समझी साजिश के तहत रूस बुलवाया गया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया। हमेशा उनके साथ जाने वाली उनकी पत्नी ललिता शास्त्री को बहला फुसलाकर इस बात के लिए मनाया गया कि वे शास्त्री जी के साथ रूस की राजधानी ताशकन्द न जायें और वे भी मान गयीं। अपनी इस भूल का श्रीमती ललिता शास्त्री को मृत्युपर्यन्त पछतावा रहा। जब समझौता वार्ता चली तो शास्त्री जी की एक ही जिद थी कि उन्हें बाकी सब शर्तें मंजूर हैं परन्तु जीती हुई जमीन पाकिस्तान को लौटाना हरगिज मंजूर नहीं। काफी जद्दोजहेद के बाद शास्त्री जी पर अन्तर्राष्ट्रीय दबाव बनाकर ताशकन्द समझौते के दस्तावेज पर हस्ताक्षर करा लिये गये। उन्होंने यह कहते हुए हस्ताक्षर किये थे कि वे हस्ताक्षर जरूर कर रहे हैं पर यह जमीन कोई दूसरा प्रधान मंत्री ही लौटायेगा, वे नहीं। पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के साथ युद्धविराम के समझौते पर हस्ताक्षर करने के कुछ घण्टे बाद ११ जनवरी १९६६ की रात में ही उनकी मृत्यु हो गयी। यह आज तक रहस्य बना हुआ है कि क्या वाकई शास्त्रीजी की मौत हृदयाघात के कारण हुई थी? कई लोग उनकी मौत की वजह जहर को ही मानते हैं।

शास्त्री जी को उनकी सादमी, देशभक्ति और ईमानदारी के लिए आज भी पूरा भरत श्रद्धापूर्वक याद करता है। उन्हें मरणोपरान्त वर्ष १९६६ में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

रहस्यपूर्ण मृत्यु— ताशकन्द समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद उसी रात उनकी मृत्यु हो गयी। मृत्यु का कारण हार्टअटैक बताया गया। इस अवसर पर आचार्य भगवान्देव जी (आचार्य गुरुकुल झज्जर) ने गुरुकुल की ओर से शास्त्री जी को श्रद्धांजलि अर्पित की थी। शास्त्री जी की अन्त्येष्टि पूरे राजकीय

सम्मान के साथ दिल्ली में शान्तिवन (नेहरू जी की समाधि) के आगे यमुना किनारे की गयी और उस स्थल को विजय घाट नाम दिया गया। जब तक कांग्रेस संसदीय दल ने इन्दिरा गांधी को शास्त्री ज़ी का विधिवत् उत्तराधिकारी नहीं चुन लिया, गुलजारी लाल नन्दा कार्यवाहक प्रधानमंत्री रहे।

शास्त्री जी की मृत्यु को लेकर तरह-तरह के अनुमान लगाये जाते रहे। बहुतेरे लोगों का, जिनमें उनके परिवार के लोग भी शामिल हैं, मत है कि शास्त्री जी की मृत्यु हार्ट अटैक से नहीं बल्कि जहर देने से ही हुई। पहली इन्क्वायरी राज नारायण ने करवायी थी, जो बिना किसी नतीजे के समाप्त हो गयी, ऐसा बताया गया। मजे की बात यह कि इण्डियन पार्लियामेण्ट्री लाइब्रेरी में आज उसका कोई रिकार्ड ही मौजूद नहीं है। यह भी आरोप लगाया गया कि शास्त्री जी का पोस्ट मार्टम भी नहीं हुआ। २००९ में जब यह सवाल उठाया गया तो भारत सरकार क़ी ओर से यह जवाब दिया गया कि शास्त्री जी के प्राइवेट डॉक्टर आर.एन. चुघ और रूस के कुछ डॉक्टरों ने मिलकर उनकी मौत की जाँच तो की थी परन्तु सरकार के पास उसका कोई रिकॉर्ड नहीं है। बाद में प्रधानमंत्री कार्यालय से जब इसकी जानकारी माँगी गयी तो उसने भी अपनी मजबूरी जतायी।

शास्त्री जी की मौत में संभावित साजिश की पूरी पोल आउटलुक नाम की एक पत्रिका ने खोली। २००९ में, जब साउथ एशिया पर सीआईए की नजर नामक पुस्तक के लेखक अनुज धर ने सूचना के अधिकार के तहत माँगी गयी जानकारी पर प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से यह कहना कि "शास्त्री जी की मृत्यु के दस्तावेज सार्वजनिक करने से हमारे देश के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध खराब हो सकते हैं तथा इस रहस्य पर से पर्दा उठते ही देश में उथल-पुथल मचने के अलावा संसदीय विशेषधिकारों को ठेस भी पहुँच सकती है।"

सबसे पहले सन् १९७८ में प्रकाशित एक हिन्दी पुस्तक ललिता के आँसू में शास्त्री जी की मृत्यु की करुण कथा को स्वाभाविक ढंग से उनकी धर्मपत्नी ललिता शास्त्री के माध्यम से कहलवाया गया था। उस समय (सन् उन्नीस सौ अठहत्तर में) ललिता जी जीवित थीं।

यही नहीं, कुछ समय पूर्व प्रकाशित एक अन्य अंग्रेजी पुस्तक में लेखक पत्रकार कुलदीप नैयर ने भी, जो उस समय ताशकन्द में शास्त्रीजी के साथ गये थे, इस घटनाचक्र पर विस्तार से प्रकाश डाला है। जुलाई २०१२ में शास्त्री जी के तीसरे पुत्र सुनील शास्त्री ने भी भारत सरकार से इस रहस्य पर से पर्दा हटाने की माँग की थी।

धन्यवाद पोस्ट कार्ड

इम लोटा दिनांक १७:०७:२०१३

माननीय भण्डारी जी,

सादर नमस्कार,

आपका भेजा हुआ सुधारक विशेषांक मिला और इसे पढ़ कर बहुत खुशी हुई, क्योंकि आपने बहुत पुराने इतिहास की नई यादाश करा दी। मेरे से मिलने वाले सज्जन थे जैसे ब्रह्मचारी हरिशरण, खुशी राम आसोधा, हरफूलसिँह और प्रह्लादसिँह और ये काम महज आप ही कर सकते थे। इस इतिहास को आपके शिवाय कोई भी सज्जन नहीं लिख सकता है अगर आप इसे नहीं लिखते तो ये इतिहास आपके साथ दफनाया ज़ाता। मैं आपका बहुत आभारी हूँ आप ने मेरे पास विशेषांक भेजा।

मैं ईश्वर से कामना करता हूँ कि भगवान् आपको लम्बी उम्र दे और गुरुकुल का पूरा इतिहास लिखें। मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि इतना बड़ा काम किया है गुरुकुल और समाज का। आप जैसा कर्मठ व्यक्ति ही ये कर सकता था।

छोटू राम

फांसी के दिन

O सत्यवीर शास्त्री, पूर्वमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु॥

देश एवं राष्ट्र को शक्तिशाली एवं सम्पन्न बनाने के लिए समाज, राष्ट्र एवं देश के हित एवं कल्याण के लिये ऋषियों ने मानव को तपस्वी, दीक्षित तथा बलिदान की भावना से ओतप्रोत होने का आदेश इस मन्त्र में दिया है। जिस राष्ट्र व देश के जन तपस्वी, दीक्षित व बलिदानी होंगे उन वीरों एवं राष्ट्र के समक्ष बड़े-बड़े देवताओं एवं राष्ट्रों ने भी नतमस्तक होना पड़ेगा। प्रस्तुत लेख में यही दर्शाया गया है कि भगतसिंह, राजगुरु एवं सुखदेव तथा अन्य रामप्रसाद बिस्मिल आदि वीरों के त्याग, तप, दीक्षा एवं बलिदानों को दर्शाते हुए कैसे उनकी तपस्या बलिदान से यह राष्ट्र स्वतन्त्रता को प्राप्त हुआ तथा जिस शक्तिशाली अंग्रेजी राज्य में सूर्य नहीं छिपता था, उस शक्तिशाली अंग्रेजी राज्य ने कैसे इन उपरोक्त वीरों के तप, त्याग एवं बलिदान के कारण नतमस्तक होना पड़ा वह आगे के लेख में पढ़ें।

भगतसिंह के वकील श्री प्राणनाथ लाहौर जेल में उनकी कालकोठरी में पहुँचे। दोनों की मुलाकात हुई। आगे की कहानी वकील के शब्दों में ही—

उस दिन मैं लगभग एक घण्टा भगतसिंह की कोठरी में उनके पास रहा। मैं बहुत बार इसी स्थान पर उनसे मिल चुका था। उनकी भूख हड़तालों पुलिस के साथ और न्यायालयों के भीतर साहसिक संघर्ष को अपनी आंखों से देख चुका था। लेकिन मैंने यह कभी अनुभव नहीं किया था कि वे इतने बहादुर साहसी और महान् हैं। मैं जानता था और वे भी जानते थे कि मृत्यु का समय निकट आ चुका है। इसके उपरान्त मैंने उन्हें प्रसन्न मुद्रा में पाया। उनके मुख पर रौनक ज्यों की त्यों थी और जब मैं उनके पास पहुंचा, वे पिंजरे में बंद शेर की तरह टहल रहे थे।

मेरे कोठरी में पैर रखते ही उन्होंने अपने विशेष लहजे में कहा—आप वह पुस्तक ले आये? मैंने क्रान्तिकारियों की पुस्तक चुपके से उन्हें दे दी। मैंने कहा देश के लिये अपना सन्देश दीजिए। बिना सोचे तुरन्त बोले—'साम्राज्यवाद मुर्दाबाद, इन्कलाब जिन्दाबाद।' मैंने भगतसिंह की मनोभावनाओं को जानने के लिए पूछा—आज आप कैसा महसूस कर रहे हैं?

उनका संक्षिप्त सा उत्तर था—मैं बिलकुल प्रसन्न हूँ। मैंने पूछा—आपकी अन्तिम इच्छा क्या है? उनका उत्तर था—बस यही कि फिर जन्म लूँ और मातृभूमि की और अधिक से अधिक सेवा करूँ। उन्होंने मुकदमे में सहयोग देने वाले नेताओं को अपनी कृतज्ञता और अपने मित्रों विशेषकर फरार साथियों के लिए शुभकामनाएँ दीं। विशेष बात यह थी कि मृत्यु के वातावरण में मेरी आवाज में कंपकपीं थी। परन्तु भगतसिंह तन, मन से पूर्ण स्वस्थ थे। वे इतने निश्चिन्त थे कि मृत्यु के प्रति उनकी निर्भीकता और निर्लिप्तता को देखकर उनके मनुष्य नहीं देवता होने का सन्देश जाता था।

एक दूसरे एडवोकेट श्री बलजीतसिंह के शब्दों में—जब मैं अन्तिम बार जेल में भगतसिंह से मिलने गया, तो मेरा मन परेशान (दु:खी) था। जेल के असिस्टेंट पुपरिण्टेण्डेण्ट ने कहा—फाँसी भगतसिंह को लगने वाली है, पर घबराए हुए आप हैं। मेरा गला भर्राया हुआ था। मैं खड़ा-खड़ा भगतसिंह को ताकता रहा। परन्तु भगतसिंह का आत्मसंयम तो देखिए कि उन्होंने मेरे कर्त्तव्य का

मुझे स्मरण कराया। बोले—फांसी तो हमारे कार्य का एक स्वाभाविक परिणाम है। मैं प्रसन्न हूँ, शान्त हूँ। मेरा कर्त्तव्य समाप्त हो गया है। भगतसिंह सब कुछ जानते हुए भी जब इतने निश्चिन्त थे तब लाहौर सेंट्रल जेल में एक व्यक्ति बहुत ही बेचैन था। उसका दिल उमड़ा जा रहा था। उसके शब्द थे—आप नहीं जानते थे भगतसिंह मेरे लिए क्या है? उनके शब्द थे—कौन जान सकता है कि मुझ पर इस समय क्या बीत रही है? ये शब्द थे लाहौर सेंट्रल जेल के बड़े जेलर खान बहादुर मोहम्मद अकबर के। इनकी चर्चा यहीं समाप्त कर अगली घटना का वर्णन करते हैं।

''सरदार आप सच्चे इन्कालाबी (क्रान्तिकारी) की हैसियत से बताएं कि क्या आप चाहते हैं कि, आपको बचा लिया जाए। इस आखिरी वक्त में भी शायद कुछ हो सकता है।'' चौदह नम्बर के कैदी साथियों ने छुटकारे सम्बन्धी पत्र भगतसिंह को भेजा। उन्होंने गम्भीर होकर उपरोक्त पत्र साथियों को भेजा।

साथियो, जिन्दा रहने की इच्छा स्वाभाविक रूप से मेरे अन्दर भी होनी चाहिए, इसे मैं छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मेरा जिन्दा रहना एक ही शर्त पर है मैं कैद होकर या पाबन्द होकर जिन्दा नहीं रहना चाहता।

मेरा नाम हिन्दुस्तानी इन्कलाब पार्टी (भारतीय क्रान्ति दल) के आदर्शों, बलिदानों ने मुझे बहुत ऊँचा कर दिया है। इतना ऊँचा कि जिन्दा रहने की सूरत में इससे ऊँचा मैं कभी नहीं हो सकता। आज मेरी कमजोरियां लोगों के सामने नहीं हैं। अगर मैं फांसी से बच गया तो वह जाहिर हो जायेगी और क्रान्ति का निशान मध्यम पड़ जायेगा या शायद मिट ही जाये। लेकिन मेरे दिलेराना ढंग से हंसते-हंसते फांसी पाने की सूरत में भारत की माताएं अपने बच्चों के भगतसिंह बनने की आरजू किया करेंगी और राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए बलिदान होने वालों की संख्या इतनी बढ़ जायेगी कि क्रान्ति को रोकना साम्राज्यवाद की समस्त राक्षसी शक्तियों के बस की बात न रहेगी।

हां, एक ख्याल आज भी चुटकी लेता है। देश और मानवता के लिये जो कुछ करने की भावना मेरे हृदय में थी। उनका एक अंश भी मैं पूरा नहीं कर पाया अगर जिन्दा रह सकता, तो शायद इनको पूरा करने का अवसर प्राप्त होता और मैं अपनी भावनाओं की पूर्ति कर सकता।

इसके अतिरिक्त कोई लालच मेरे हृदय में फांसी से बचे रहने के लिए कभी नहीं आया। मुझ से अधिक भाग्यशाली कौन होगा? मुझे आजकल अपने आप पर अत्यधिक गर्व है। मुझ में अब कोई इच्छा बाकी नहीं है। अब तो बड़ी बेताबी से आखिरी परीक्षा का इन्तजार है। ईश्वर से प्रार्थना है कि यह और निकट आ जाये।

आपका साथी—भगतसिंह

भगतसिंह ने बहुत कुछ लिखा है, बहुत कुछ कहा है और बहुत कुछ किया है। पर यह पत्र इस दृष्टि से अनोखा है कि इसमें भगतसिंह के कार्यों, उनकी सफलताओं और उनके इरादों का रेखाचित्र एक ही जगह हमें मिल जाता है और वे अपनी पूरी ऊँचाई व महानता में हमारे समक्ष आ जाते हैं।

जो सज्जन साथियों का पर्चा लाया था। वही भगतसिंह का पत्र लेकर चल दिया। उसे बुलाकर भगतसिंह ने कहा—उनसे कहना यारो, बात तो बहुत हो ली, अब रसगुल्ले तो खिला दो। थोड़ी ही देर में रसगुल्ले आ गये। भगतसिंह मस्ती से उन्हें खाने लग गये। यही उनका आखिरी भोजन था। सूर्य आकाश के मध्य अपनी पूरी ऊँचाई पर

था और भगतसिंह भी अपने प्रताप की महानता की पूरी ऊँचाई पर जा पहुंचे थे।

सब कैदी इस समय बाहर थे। असिस्टेंट जेलर ने सबसे अपनी-अपनी बारीक में बन्द होने को कहा, पर यह बन्द होने का तो समय नहीं है। अभी तो दोपहरी भी नहीं ढली थी, वे सब हैरान थे, क्या बात है? हमें बन्द होना चाहिये या नहीं?

तभी बड़े जेलर मुहम्मद अकबर अकेले खड़े हो गये। अत्यधिक तनाव था उनमें। उनके भीतर ज्वालामुखी फूट रहा था। उनके मुख से आप ही आप निकला—"हाँ बन्द न हों, जो कुछ होगा मैं देख लूँगा।" इसी अवस्था में वे वापिस लौट गए। परन्तु मृत्युञ्जय भगतसिंह की मृत्यु की चाह के आदेश से सब कैदी अपनी-अपनी बारीक में बन्द हो गये। जो कभी नहीं हुआ था, वह यह हो रहा था कि सन्ध्या के समय बन्द होनेवाली जेल दोपहर को ही बन्द हो रही थी। सूर्य आकाश के मध्य था, पर यह दोपहर कहां थी? यह तो इतिहास की सन्ध्या थी। यह भगतसिंह के जीवन की सन्ध्या थी। इस सन्ध्या में एक प्रकाश की चमक दिखाई दी। यह प्रकाश एक वीर क्रान्तिकारी के विश्वास की चमक।

श्री वीरेन्द्र 'सम्पादक प्रताप' के शब्दों में जिस दिन वीरवर राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह को फांसी के तख्ते पर लटकाया गया तब मैं भी लाहौर की सैण्ट्रल जेल में बन्द था। फांसी से पहले एक ऐसी घटना हुई, जो मेरे दिल और दिमाग पर सदा के लिए अपना प्रभाव छोड़ गई कि भगतसिंह किस फौलादी इरादे के मानव थे?

लाहौर सेंट्रल जेल का चीफ वार्डर एक रिटायर्ड फौजी हवलदार सरदार चतरसिंह था। उन्हें सूचना दी गई कि आज शाम को राजगुरु, भगतसिंह तथा सुखदेव को फांसी दे दी जायेगी, इसलिए वह अपनी व्यवस्था पूरी कर ले। चतरसिंह एक मधुर स्वभाव का ईश्वरभक्त व्यक्ति था। प्रातः सायं गुरुवाणी का पाठ किया करता था। जब उसको ज्ञान हुआ कि भगतसिंह की जिन्दगी के कुछ ही घण्टे बाकी हैं तो वह सरदार भगतसिंह के पास गया और बोला—बेटा, अब तो अन्तिम समय आ चुका है, मैं तुम्हारे बाप के बराबर हूँ। मेरी एक बात मान लो। भगतसिंह ने हंसकर कहा—कहो क्या आज्ञा है? सरदार चतरसिंह ने कहा कि मेरी केवल एक अपील है कि आखिरी समय में तो वाहे गुरु का नाम ले लो और गुरुवाणी का पाठ कर लो।

सरदार भगतसिंह जोर से हंस पड़े और कहा-आपकी इच्छा पूरी करने में मुझे कोई आपत्ति नहीं हो सकती थी। अगर आप कुछ समय पहले कहते। अब जबकि अन्तिम समय आ गया है। मैं परमात्मा को याद करूँ तो वे कहेंगे कि यह कायर है। समस्त आयु तो इसने मुझे याद नहीं किया अब मृत्यु के समय मुझे याद करने लगा है। इसलिए अच्छा यही होगा कि मैंने जिस तरह अपना जीवन व्यतीत किया है, उसी तरह मुझे इस संसार से विदा होने दो। मुझ पर व्यक्ति यह इल्जाम तो लगायेंगे कि मैं नास्तिक था और मैंने ईश्वर पर विश्वास नहीं किया, लेकिन यह तो कोई नहीं कहेगा कि भगतसिंह बुजदिल और कायर था।

अधिकारियों ने कालकोठरी में आकर कहा—सरदार जी, फांसी लगाने का हुक्म आ गया है, आप तैयार हो जायें। भगतसिंह के दाहिने हाथ में पुस्तक थी। भगतसिंह ने कहा—ठहरो, एक क्रान्तिकारी दूसरे क्रान्तिकारी से मिल रहा है। आवाज में कड़क थी तथा क्रान्तिकारी दोस्त से मिलने की ललक भी थी। भय एवं उदासी के भाव तो कहीं दूर तक भी नहीं थे। भगतसिंह ने पुस्तक पढ़ी और पुस्तक को छत की ओर उछाल कर उचक कर खड़े हो गये। सत्ताधारियों के चेहरे उदास थे, सत्ताहीन

कैदी का चेहरा खुशी से चमक रहा था।

भगतसिंह ने कहा—हमारे हाथों में हथकड़ियाँ न लगाई जाये और हमारे चेहरे पर कंटोप न ढके जायें। भगतसिंह की यह बात मान ली गई। भगतसिंह ने बहुत ही भावविभोर होकर, अपनी कोठरी को एक बार बहुत प्यार से देखा। मानो बुद्ध ने गृहत्याग के समय अपनी सोयी प्यारी यशोधरा को निहारा हो और वे कोठरी से बाहर आ गये। सुखदेव और राजगुरु भी अपनी-अपनी कोठरियों से आ चुके थे। तीनों ने एक-दूसरे को देखा और गले लगाया।

अब भगतसिंह बीच में थे। सुखदेव उनके दायें और राजगुरु बायें। भगतसिंह ने अपनी एक भुजा राजगुरु के गले में डाली तथा दूसरी सुखदेव के गले में और तब गाना आरम्भ किया—

दिल से निकलेगी न मरकर भी वतन की उलफत,
मेरी मिट्टी से भी खुशबू-ए-वतन तेरी आयेगी।

इस सम्मिलित स्वर में कण्ठों का माधुर्य था, हृदयों का सारस्य था, उल्लास की ऊँचाई थी। तीनों झूमकर गा रहे थे। वातावरण में चारों ओर अवसर की उदासी थी। पर इन तीनों के आसपास रोमांचित उल्लास था। ये तीनों ऐसे एकाकार खड़े थे जैसे सुनसान में कोई दीपक जल रहा हो।

वार्डर ने आगे बढ़कर फांसी का काला दरवाजा खोला। भीतर लाहौर का अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर नियमानुसार खड़ा था। इन तीनों को खुले देखकर वह जरा परेशान हुआ। पर मुहम्मद अकबर ने उन्हें आश्वस्त कर दिया। तभी भगतसिंह उनकी तरफ संकेत कर बोले—मजिस्ट्रेट महोदय, आप भाग्यशाली हैं कि आज आप अपनी आंखों से यह देख रहे हैं कि भारत के क्रान्तिकारी किस प्रकार अपने राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए प्रसन्नता पूर्वक अपने आदर्श के लिए मृत्यु का आलिंगन कर रहे हैं।

डिप्टी कमिश्नर भगत के स्वर, शब्द और स्वरूप में व्याप्त सच्चाई से प्रभावित होकर शर्म से पानी-पानी हो गया। अब भगतसिंह और उनके साथी फांसी मंच की सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे। वास्तव में इस मंच ने ऐसे पैर कभी नहीं देखे थे जिनमें न कंपकंपी थी, लड़खड़ांहट और जो जवानी की पूर्ण मचमचाहट के साथ वहां आ गये थे। तीन फंदे लटक रहे थे। तीनों वीर उसी क्रम से उनके नीचे खड़े हो गये। बीच में भगतसिंह, दाएं-बाएं राजगुरु, सुखदेव, तीनों एक साथ गरजे—'इन्कलाब जिन्दाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद।'

तीनों ने अपना-अपना फन्दा पकड़ा और उसे चूमकर अपने ही हाथ से गले में डाल लिया। भगतसिंह ने पास में खड़े जल्लाद से कहा—कृपा कर इन फन्दों को आप ठीक कर लें। जल्लाद ने ऐसे लोग कब देखे थे, ऐसे स्वर कब सुने थे, कांपते हाथों और डबडबाती आंखों से उसने फन्दे ठीक किये। नीचे आकर चरखी घुमाई तख्ता गिरा और तीनों वीरपुत्र भारत माता को अर्पित हो गये। यह सायं के 7 बजकर 33 मिनट का समय था।

जेल का प्रत्येक जंगला जेल में बन्द अन्य सब कैदियों के इन्कलाब जिन्दाबाद, साम्राज्यवाद मुर्दाबाद के नारों से गूंज रहा था। इन नारों से अंग्रेजी सरकार की चूलें हिल गईं जिसके कारण इस दिन से सोलह वर्ष के उपरान्त वह अंग्रेजी साम्राज्य इन शहीदों के बलिदानों के कारण सदा-सदा के लिए समाप्त हो गया।

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले,
वतन पर मरनेवालों का यही नामोनिशां होगा।

ओ३म्

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध (मान्यता प्राप्त) आर्षपाठविधि के निःशुल्क शिक्षाकेन्द्र

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का

९९वां वार्षिक महोत्सव

दिनांक २१-२२ फरवरी २०१५ ई०

सभी सज्जनों को सहर्ष सूचित किया जाता है कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महाशिवरात्रि पर्व पर गुरुकुल झज्जर का वार्षिक महोत्सव चैत्रकृष्ण, तृतीया चतुर्थी २०७१ वि० तदनुसार २१-२२ फरवरी, शनिवार, रविवार को हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जा रहा है। इस समारोह में आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, साधु-संन्यासी और राज्य सरकार के राजनेता पधार रहे हैं। अतः निवेदन है कि परिवार और इष्टमित्रों सहित पधारकर धर्म का लाभ उठायें तथा महोत्सव की शोभा बढ़ायें।

अथर्ववेदपारायण महायज्ञ

महोत्सव के निमित्त १३ फरवरी शुक्रवार से अथर्ववेदपारायण महायज्ञ प्रारम्भ किया जायेगा। इसके लिए घृत, सामग्री और समिधा का दान आना भी प्रारम्भ हो चुका है। प्राणिमात्र के कल्याणकारी इस पवित्र यज्ञ में घृत, सामग्री, गूगल, समिधा आदि के रूप में आप सभी का सहयोग वांछित है। यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव शीघ्र सम्पर्क करें जिससे उनकी व्यवस्था की जा सके।

व्यायाम प्रदर्शन

२१ फरवरी, शनिवार के दिन गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा विविध प्रकार के भारतीय व्यायामों का प्रदर्शन किया जायेगा जिनमें योगासन, दण्ड-बैठक, जिम्नास्टिक, मल्लखंभ, लाठी, भाला, तलवार, धनुष-बाण, लोहे के सरिये को गले से मोड़ना, प्राणायाम और ब्रह्मचर्य के बल से जीप रोकना आदि होंगे।

सूचना :-

१. गुरुकुल की स्वामिनी 'विद्यार्य सभा गुरुकुल झज्जर' का साधारण वार्षिक अधिवेशन २१ फरवरी को रात्रि के ८ बजे प्रारम्भ होगा। सभी सदस्य समय पर पधारें।
२. २१०० रु० वा इससे अधिक दान देने वाले सज्जनों, समाजों और ग्रामों के नाम पत्थर पर अंकित किये जायेंगे।
३. ११००० रु० वा इससे अधिक दान देने वालों के नाम का अलग से पत्थर लगेगा।
४. एक लाख वा इससे अधिक रुपये देने वाले सज्जनों के नाम का अलग से पत्थर तथा चित्र गुरुकुल के प्रमुख स्थल पर लगाया जायेगा।
५. ऋतु अनुकूल वस्त्र, बिस्तर साथ अवश्य लायें। भोजन तथा आवास का प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से किया जायेगा।

निवेदक

आचार्य विजयपाल	**राजवीरसिंह**	**पूर्णसिंह देशवाल**
आचार्य	मन्त्री	प्रधान

गणतन्त्र दिवस भारत का एक राष्ट्रीय पर्व

O राहुल आर्य, व्यवस्थापक सुधारक

सन् १९२९ के दिसम्बर में लाहौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ जिसमें प्रस्ताव पारित कर इस बात की घोषणा की गई कि यदि अंग्रेज सरकार २६ जनवरी १९३० तक भारत को उपनिवेश का पद (डोमीनियन स्टेटस) नहीं प्रदान करेगी तो भारत अपने को पूर्ण स्वतंत्र घोषित कर देगा। २६ जनवरी १९३० तक जब अंग्रेज सरकार ने कुछ नहीं किया तब कांग्रेस ने उस दिन भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के निश्चय की घोषणा की और अपना सक्रिय आंदोलन आरंभ किया। उस दिन से १९४७ में स्वतंत्रता प्राप्त होनें तक २६ जनवरी स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता रहा। तदनंतर स्वतंत्रता प्राप्ति के वास्तविक दिन १५ अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के रूप में स्वीकार किया गया। २६ जनवरी का महत्त्व बनाए रखने के लिए विधान निर्मात्री सभा (कांस्टीट्यूएंट असेंबली) द्वारा स्वीकृत संविधान में भारत के गणतंत्र स्वरूप को मान्यता प्रदान की गई।

गणतन्त्र दिवस समारोह

प्रतिवर्ष २६ जनवरी को भारत के राष्ट्रपति द्वारा भारतीय राष्ट्र ध्वज को फहराया जाता हैं और इसके बाद सामूहिक रूप में खड़े होकर राष्ट्रगान गाया जाता है। गणतंत्र दिवस को पूरे देश में विशेष रूप से राजधानी दिल्ली में बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस अवसर के महत्त्व को चिह्नित करने के लिए हर साल एक भव्य परेड राष्ट्रपति भवन इंडिया गेट राजपथ राजधानी, नई दिल्ली से प्रारम्भ की जाती है। इस भव्य परेड में भारतीय सेना के विभिन्न रेजिमेंट, वायुसेना, नौसेना आदि सभी भाग लेते हैं। इस समारोह में भाग लेने के लिए देश के सभी हिस्सों से राष्ट्रीय कडेट कोर व विभिन्न विद्यालयों से बच्चे आते हैं, समारोह में भाग लेना एंक सम्मान की बात होती है। परेड प्रारंभ करते हुए प्रधानमंत्री अमर जवान ज्योति (सैनिकों के लिए एक स्मारक) जो राजपथ के एक छोर पर इंडिया गेट पर स्थित है पर पुष्पमाला डालते हैं। इसके बाद शहीद सैनिकों की स्मृति में दो मिनट मौन रखा जाता है। यह देश की संप्रभुता की रक्षा के लिए लड़े युद्ध व स्वतंत्रता आंदोलन में देश के लिए बलिदान देने वाले शहीदों के बलिदान का एक स्मारक है। इसके बाद प्रधानमंत्री, अन्य व्यक्तियों के साथ राजपथ पर स्थित मंच तक आते हैं, राष्ट्रपति बाद में इस अवसर पर पधारे हुए मुख्य अतिथि के साथ आते हैं।

परेड में विभिन्न राज्यों से शानदार चलित प्रदर्शिनी भी भाग लेती है, प्रदर्शिनी में हर राज्य के लोगों की विशेषता, उनके लोक गीत व कला का दृश्यचित्र प्रस्तुत किया जाता है। हर प्रदर्शिनी भारत की विविधता व सांस्कृति समृद्धि प्रदर्शित करती है। परेड और जुलूस राष्ट्रीय टेलीविजन पर प्रसारित होता है और देश के हर कोने में करोड़ों दर्शकों के द्वारा देखा जाता है।

शोषित होती भावना

O डॉ० सरिता वाशिष्ठ

अबोध बाल श्रमिक टिफन के डिब्बे देने फैक्ट्री, दफ्तर, विद्यालय जा रहा है, उनमें क्या है वह नहीं जानता। महिला श्रमिकों का शोषण हो रहा है। मेरे ही सर्वेक्षण के आधार पर कठोर निर्माण कार्यों पर महिला श्रमिकों की संख्या पुरुषों से दस से बीस प्रतिशत अधिक है।

पिण्डारी प्रथा का जीर्णोद्धार हो चुका है। विदेशी पूंजी अर्जित करने के चक्कर में हम अपनी वस्तु/पदार्थ के अस्तित्व को ही नकार रहे हैं। बढ़ती जनसंख्या के लिए रोटी जुटाने का प्रयत्न है परन्तु हाथ सृजनोन्मुखी बने, कोई नहीं सोच रहा है। सौ करोड़ हाथों को काम चाहिए? कहां है काम। सौ करोड़ हाथ परतन्त्र कैसे बने, नौकरियों के क्षेत्र तलाशे जा रहे हैं। अति-यान्त्रिकता ने व्यक्ति को उद्यम से बाहर फेंक दिया है। हाथ सप्ताह में पांच दिन काम करें, तो सौ करोड़ हाथ दो दिन क्या करे? बस पाड लग रही है भयंकर पाड़? यही है हिंसा और आक्रामक वृत्ति के पीछे।

श्रम की चेतना लुप्त हो गई है। अनुपातन दृष्टि से एक बालक/विद्यार्थी। युवा छः घण्टे टी.वी. के सामने प्रतिदिन बिताता है। बाईस खिलाड़ी खेल रहे हैं, भीड़ देख रही है। देर रात की पिक्चर है घर के घर जाग रहे हैं। इनके कथानक कितने प्रेरक हैं? किस दिशा की ओर ले जा रहे हैं? दूरदर्शन ने दी है- भ्रान्त संस्कृति। प्रातः चित्रहार के नाम पर यौन कुण्ठाओं या कामुक प्रदर्शनों की प्रस्तुति। घर में बालक बालिकाओं के सामने पुस्तक है, मन और मस्तिष्क गुनगुना रहे हैं। आंखें बराबर टीवी फलक पर बनी रहती हैं।

क्या विकासशील देश की पीढ़ी को चमक दमक की अफीम नहीं दी जा रही है। भारत अपनी पहचान खो रहा है खानपान में, रहन सहन में, व्यवहार में, आवरण और संस्कार में। कैसा है यह प्रगति का आलम जो चन्द लोगों की सोच की प्रतीक्षा की जा रही है। देश के किसी कोने में एक उद्योग स्थापित करने की घोषणा होती है तो तालियां बजने लगती हैं? विदेश ऋण वाहवाही का नहीं तबाही का आगाज है।

युवा जीवन के प्रति न उतावला है और न ही बावला है उसमें स्वदेशी और स्वराज के साथ 'मेरा' भाव लोप है। बच्चा बीमार है, दादी कहती है, 'लोंग घिसकर दे दो, ठण्ड का असर है। दो चार बार दोगे ठीक हो जाएगा।' नव दम्पति शिशु विशेषज्ञ के यहां पंक्ति में खड़े हैं, बारी आई, और मात्र तीन सौ रुपये के जांच लिख दिए साथ ही यह भी कहा, "डॉक्टर को सत्य ही कहना चाहिए यों तो सब कुछ प्रभु के हाथ है, सावधान करना मेरा फर्ज है किसी भी समय कुछ हो सकता है, बच्चा बड़ा स्वीट है।" दो माह बीत रहे हैं। फिर दादी कहती है। "इसे हरड़ घिस कर दे दो बच्चा कई दिन से दूध उलट रहा है।" दादी सठिया गई है। दादी हरड़ लेने जाती है, "माता, तुम आई हो इसलिए आठ रुपये की एक है आम लोगों को दस रुपये की देते हैं।" "पर बेटा यह तो साफ नहीं है?" नौकर ने हरड़ रखवा ली और कहा, "बुढ़िया आगे देख।"

कहां ले जाएगी यह पिण्डारी संस्कृति हमें। दान से कई गुना अधिक, प्रभावी व्यक्ति, अपने सम्मान पर खर्च करवा रहे हैं। व्यक्ति के सोच पर इतनी बड़ी सेंध कभी नहीं लगी थी। समाचार, सम-आचार का पालन नहीं करते, एक ही कृत्य की एक सराहना कर रहा है दूसरा भर्त्सना। युवाचार्य महाप्रज्ञ कह रहे हैं, ऐसे में एक ही मार्ग है, 'अप्पाणं सरणं गच्छामि' अणु अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी कह रहे हैं—साधारण से साधारण व्रत लो, व्रत ही जीवन है, प्राण है, चाहे व्रत अनुव्रत ही हो कहीं से भी आरम्भ करो। आरम्भ करो। भयंकर पाड़ लग रही है, सेंध लग रही है, मन वचन कर्म का संचित कोष लुट रहा है। सब सो रहे हैं। जागो, जागते रहो। भावना के सौदागरों के चंगुल से अच्छा है, अपने हाथों को आप काम दें। (आत्मबोध से इदन्नमम से साभार)

— रीडर, हिन्दी विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय

लोहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

O स्वामी सदानन्द सरस्वती, दयानन्दमठ, दीनानगर

जन्म

महर्षि दयानन्द १८७६ ईस्वी में पंजाब आए। उनके शुभागमन से इस वीर भूमि के निवासियों में चेतना का संचार हुआ। नवजागरण की इस शुभ वेला में सरदार भगवानसिंह के घर पौष मास विकम संवत् १९३४ की पूर्णिमा को बालक केहर सिंह ने जन्म लिया। यही बालक आगे चलकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के नाम से विख्यात हुआ। लुधियाना जिला ने राष्ट्र को कई विभूतियां दी.हैं। राष्ट्रवीर लाजपतराय, यशस्वी दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द तथा स्वाधीनता सेनानी साहित्यकार स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक भी इसी की देन थे। इसी जिला के मोही ग्राम में जन्म लेकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी नै इसे गौरान्वित किया। श्री पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार पूर्व कुलपति गुरूकुल कांगड़ी भी इसी जिला के हैं।

परिवार

बालक केहर सिंह के पूर्वज हल्दी घाटी से आकर यहां बसे थे। उनकी रगों में राजस्थान के शूरवीरों व बलिदानियों का उष्ण रक्त बह रहा था। वीरभूमि पंजाब के वातावरण में पल कर केहरसिंह यथा नाम तथा गुण बन गये। सरदार भगवान सिंह जी की पत्नी का देहान्त हो गया इसलिए केहर सिंह का लालन-पालन उनके ननिहाल कस्बा लताला में हुआ।

आर्यसमाज का परिचय

लताला में श्री पं० बिशनदास जी उदासी महात्मा से बैद्यक पढ़ते रहे। इन्हीं पण्डित जी के सत्संग से वैदिक धर्म के संस्कार विचार मिले और इन्हीं महात्मा जी के डेरे पर महात्माओं के सत्संग से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का संकल्प करके विरक्त हो गये।

गृहत्याग और संन्यास

पिता जी की चाह थी कि वह सेना में जनरल कर्नल बनें परन्तु केहर सिंह वैभवशाली परिवार को त्यागकर संन्यासी बन गये। धर्मशास्त्रों का पठन पाठन संस्कृत का अभ्यास व उपदेश देते हुए कई वर्ष केवल कौपीनधारी रहे। आर्यसमाज के नेताओं व विद्वानों में सर्वप्रथम आपने ही (१९५७ विक्रम) संन्यास लिया।

विदेशों में

संन्यास लेकर आप ३-४ वर्ष के लिए दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में धर्म प्रचार करते रहे। इसके लिए किसी सभा संस्था से अपने कोई आर्थिक सहायता नहीं ली। स्वदेश लौटे तो पं० बिशनदास जी की आज्ञा से विधिवत् आर्यसमाज के कार्य में जुट गए। योगाभ्यास, स्वाध्याय, राष्ट्रभाषा प्रचार, ग्राम सुधार, ब्रह्मचर्य, व्यायाम आदि के लिए कई वर्ष रामामण्डी को केन्द्र बनाकर कार्य किया। फिर लुधियाना को केन्द्र बना लिया। आपके तप, तेज व त्याग से सारा पंजाब प्रभावित हुआ।

पुनः विदेश यात्रा

१९१४ ई० में आप मारीशस में वेद प्रचार के लिए गये। तीन वर्ष तक आपने वहां धर्मोपदेश करते हुए वहां के लोगों को संगठन सूत्र में बांधा। भारत के राष्ट्रीय हितों की वहां रक्षा की। राष्ट्रभाषा का प्रचार किया। जनता का नैतिक उत्थान तथा चरित्र निर्माण किया।

स्वतन्त्रता संग्राम में

१९१६ ई० में स्वदेश लौट कर आर्य समाज के कार्य के साथ राष्ट्रीय स्वाधीनता सग्राम में कूद

पड़े। १९१९ ई० में मार्शल ला के दिनों में पण्डित मदनमोहन मालवीय जी की प्रेरणा पर आपने कांग्रेस को विशेष सहयोग दिया। १९२० ई० में बर्मा गये। वहां धर्म प्रचार के साथ स्वराज्य का प्रचार किया। माण्डले की ईदगाह से २५००० के जनसमूह में स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ स्वराज्य का खुल्लम खुल्ला प्रचार किया। अंग्रेज सरकार की आंख में आप कांटे की भांति चुभने लगे।

काल कोठरी में

१९३० ई० में पंजाब कांग्रेस के सब नेता जब जेलों में बन्द थे तो सत्याग्रह को चलाया। डा० मुहम्मद आलम के जेल जाने पर आप कुछ समय के लिए प्रदेश कांग्रेस के प्रधान भी बनाए गये। इस काल में आंध्र प्रदेश के विख्यात कांग्रेसी नेता व स्वतन्त्रतासेनानी पं० नरेन्द्र (हैदराबाद) इत्यादि को अपने जेल भेजा।

१९३० ई० में लाहौर में कांग्रेस की एक प्रचण्ड सभा में अध्यक्ष पद से एक भाषण देने पर आपको बन्दी बना लिया गया। आपकी गतिविधियों के कारण श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय की सरकार ने तलाशी ली। स्वराज्य संग्राम में केवल आर्यसमाज के उपदेशक विद्यालय (Missionary College) की ही तलाशी ली गई।

सेना में विद्रोह का आरोप

१९४२ ई० मे भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रचार कर रहे थे कि आपने भापड़ौदा कस्बा हरियाणा में एक बैठक बुलाकर हरियाणा के चौधरियों से कहा कि सेना में कार्य करने वाले अपने पुत्रों तथा सगे सम्बन्धियों से आप कहें कि सत्याग्रहियों पर गोली मत चलाएं। आप की हरियाणा यात्रा का अपूर्व प्रभाव पड़ा। सरकार यह सहन न कर सकी। वायसराय के विशेष आदेश से आप को शाही किला लाहौर में बन्द करके अमानुषिक यातनाएं दी गई। किला से छोडे गऐ तो विश्व युद्ध की समाप्ति तक दीनानगर में नजरबन्द किए गए। आप पर कई प्रतिबन्ध लगाए गए। जब आप शाही किला में बन्दी बनाए गए तो पंजाब के गवर्नर के वध का षड्यन्त्र करने का भी आरोप लगाया गया।

कांतिकारियों को शरण

आप दस वर्ष श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय के आचार्य पद पर आसीन रहे और सैंकड़ों योग्य शिष्य आर्यसमाज को प्रदान किये जो उनके चरणचिन्हों पर चलते हुए आर्यसमाज का प्रचार कर रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिष्ठाता वेदप्रचार का कार्यभार भी आपके कन्धों पर था। तब आपने समय-समय पर कई भूमिगत कांतिकारियों को लाहौर में शरण दी।

१९३८ ई० में दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना करके इसे मानव सेवा केन्द्र बनाया। धर्म प्रचार संस्कृत प्रसार का तो यह केन्द्र ही है। सहस्रों रोगी प्रतिदिन यहां धर्मार्थ औषधालय से चिकित्सा करवाते हैं। इस आश्रम में भी देश के स्वतन्त्र होने तक कई कांतिकारी देशभक्त भूमिगत होने पर शरण पाते रहे, महात्मा गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने के लिए स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के सुशिष्य यति जी को विशेष रूप से दयानन्दमठ से ही सत्याग्रह करने की आज्ञा दी थी। इस समय उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज इस मठ के अध्यक्ष थे।

नवाबों से टक्कर

आपने मालेरकोटला, लोहारू व निजाम हैदराबाद के विरुद्ध सफल मोर्चे लगाकर जन अधिकारों की रक्षा की। आपके सफल व कुशल नेतृत्व से आर्यसमाज को अपूर्व विजय प्राप्त हुई। महात्मा गांधी आदि नेता भी आपकी कार्यक्षमता से अत्यन्त प्रभावित हुए। इन संघर्षों से स्वराज्य आन्दोलन की गति तीव्र हुई।

लहूलुहान

लुहारू मे तो आप पर कुल्हाड़ों व लाठियों से प्राण प्रहार किये गये। आजन्म ब्रह्मचारी ६५ वर्ष की आयु में इन भयंकर प्रहारों में भी अडिग खड़े रहे। आप के सिर पर इन घावों के इक्कीस चिन्ह थे। एक तो बहुत बड़ा निशान दूर से ही दीख जाता था।

विदेशों में राष्ट्रीय दूत

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् भी एक बार आप पूर्वी अफ्रीका में आर्यसमाज के प्रचार के लिए गए। देश स्वतन्त्र हुता तो भारत सरकार की विशेष प्रार्थना पर आप पूर्वी अफ्रीका व मारीशस की यात्रा पर गये। आप ने इन देशों में रहने वाले भारतीयों की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक अवस्था का अध्ययन किया और विदेशों में भारतीय हितों की रक्षा के लिए बड़ा काम किया। मारीशस की स्वतन्त्रता के लिए आपने मार्ग प्रशस्त करने के लिए बड़ा काम किया।

बहुमुखी प्रतिभा-तेजस्वी व्यक्तित्व

अस्पृश्यता निवारण व दलितोद्धार के लिए आपने अविस्मरणीय काम किया। स्वदेशी प्रचार, गोरक्षा, राष्ट्रभाषा प्रचार, स्त्री शिक्षा के लिए आपने सारे देश का कई बार भ्रमण किया। पीड़ित सेवा के लिए सदैव अग्रणी रहे। आप कई भाषाओं के विद्वान् लेखक, सुवक्ता व इतिहास के सर्मज्ञ विद्वान् थे। आप वर्षो आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के कार्यकर्त्ता प्रधान रहे।

महाप्रयाण

'Sound mind in a sound body' बलवान् शरीर में बलवान् आत्मा की उक्ति आप पर अक्षरश: चरितार्थ होती है। भीमकाय स्वतन्त्रानन्द इतिहास में वर्णित हनूमान्, भीष्म, दयानन्द सरीखे ब्रह्मचारियों की कड़ी में से एक थे १३-४-१९५५ को बम्बई में आप को निर्वाण प्राप्त हुए।

एक भेंट स्वामी दयानन्द से

○ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष
आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा

प्रात:काल का समय था, दरवाजे पर खटखटाहट हुई। इतने प्रात: कौन आ सकता है! कितनी ही आशंकाओं से भरा हुआ मैं द्वार खोलता हूं, क्या देखता हूं कि एक संन्यासी मुझे देखकर जिज्ञासाभाव से मुस्करा रहा है। अभी मैं न तो गहरी नींद में था और न स्पष्टत: जागा। यह क्या? एक तेज रोशनी मेरी आंखों में पड़ती है, मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं आ रहा था कि जिस व्यक्ति की हर जगह पर जय-जयकार बोली जा रही है, वही विशालकाय संन्यासी मेरे सम्मुख खड़ा है। वह संन्यासी मन्द-मन्द मुस्करा रहा है और मैं असमंजस में पड़ा हुआ कभी अपने आपको और कभी उस संन्यासी को देख रहा हूं। मुझे विश्वास नहीं आ रहा था। अरे! उन्हें तो स्वर्ग सिधारे १३१ वर्ष हो चुके हैं। वे इस रूप में कैसे आ सकते हैं? मैंने अपने आप को संभाला और वे संन्यासी मुस्कुराते हुए कहने लगे, 'आर्य जी! घबराने की कोई बात नहीं। मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती हूं। उनके ऐसा कहते ही मैं अचम्भे में पड़ गया परन्तु इससे पूर्व मैं और अधिक परेशानी अनुभव करता उन्होंने कहा-'आर्य जी, मैं आप के सामने कुछ प्रश्न रखना चाहता हूं। उनके मुझे उत्तर दीजिए।'' यह कहते ही वे मेरे कन्धे पर हाथ रखकर धीरे-धीरे चलते हुए मेरे अतिथि गृह तक पहुंच गये और मुझे अपने सामने बिठाकर ये प्रश्न करने लगे-

१. मैंने जो सत्य सनातन वैदिक धर्म की मशाल आप के हाथों में दी थी, क्या वह मशाल जल रही है या बुझने के कगार पर है?

२. जिस जाति-पांति का मैंने जीवन भर विरोध किया था, क्या तुम उन्हीं जाति सूचक का प्रयोग करके डींग नहीं मारते हो?

३. जिन नियमों-उपनियमों के आधार पर मैंने आर्यसमाज की नींव रखी थी क्या तुम इस नींव को खोखला करने में नहीं लगे हो?

४. मैंने तुम्हें श्रेष्ठ सीधा-सच्चा वेद-मार्ग दिखाया था जो प्रभु का आदेश, उपदेश और सन्देश है, उसका तुम्हें आधार दिया था। उसके प्रसार का कार्य छोड़ कर क्या तुम भी आर्यसमाज के रूप में भवनों, दुकानों स्कूलों और बारात घर की पंक्तियां नहीं सजा रहे हो?

५. मैंने जो सत्य सनातन वैदिक धर्म की मशाल तुम्हारे हाथों में दी थी, क्या तुम उसे आर्यसमाज मन्दिर में बने स्कूल, दुकान, बारात घर और औषधालय के कोने में रखकर- **''वेद की ज्योति जलती रहे''** व **''ओ३म् का झंडा ऊंचा रहे''** बोलकर शांति पाठ नहीं करा रहे हो?

६. साप्ताहिक कार्यक्रम को तुमने इतना नीरस बना दिया है कि हवन किया, दो भजन बोले, सूचना दी और कार्यक्रम की इति श्री कर दी। क्या इसी हेतु मैंने आर्यसमाज की स्थापना की थी? वेद पढ़ने-पढ़ाने की बात तो दूर, तुमने सुनना और सुनाना भी बन्द कर दिया।

७. क्या तुम महापुरुषों के चित्रों के नीचे कव्वालियों को गवाते और लड़के-लड़कियों के नाच नहीं करा रहे हो?

८. भजन सन्ध्या के नाम पर मूर्ति-पूजा जैसे भयंकर पाप को क्या तुम नहीं कर रहे हो?

९. वेद प्रचार की बजाय गीता ज्ञान की कथायें क्या तुम्हारे आर्यसमाज में नहीं हो रही है? आज गीता कथा करने वाले विद्वान् तुम्हारे आर्यसमाजों में अधिक सम्मान प्राप्त कर रहे हैं और वेद कथा कहने वाले विद्वान् उपेक्षित। ऐसा क्यों?

१०. जिस सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ को मैंने जन कल्याण व वेद प्रचार हेतु बड़े परिश्रम से लिखा था उसे घर घर पहुंचाने की अपेक्षा क्या अपने पुस्तकालयों की अल्मारियों में तुम ने बन्द नहीं कर दिया है?

११. मैंने जिन पाखण्डों, गुरुडम, अज्ञान आदि को दूर करने के लिए अनेक बार विष पीया, क्या तुम उन्हीं पाखण्डों का शिकार नहीं हो गये हो? क्या तुम्हारे प्रत्येक विचार के स्थान पर गुरुडम ने स्थान नहीं ले लिया है? क्या तुमने कभी वैदिक ज्ञान प्राप्त कर अज्ञानता को दूर करने के लिए समय निकाला है?

१२. क्या तुम पद-मान-महत्त्व और सत्ता के लिए दिन-रात योजनायें नहीं बनाते रहते तो? तुम गुटबाजी में ऐसे फंसे हो कि दूसरे पक्ष का व्यक्ति कितना ही वैदिक धर्म अनुयायी, स्वाध्यायी सेवाभावी, सत्संगी क्यों न हो, तुम्हें इसीलिए नहीं भाता कि वह तुम्हारे गुट का नहीं है। क्या यह बात ठीक है?

१३. तुम्हारी इस चुनावी जंग को देखकर श्रद्धालु, भावनाशील, सद्विचारों और सिद्धान्तों को प्यार करने वाले क्या तुम से अलग नहीं होते जा रहे?

१४. जिस सहशिक्षा और अंग्रेजियत की शिक्षा का मैं विरोधी रहा, वही सब कुछ मेरे नाम पर खड़े किये गये डी.ए.वी. स्कूलों व समाज मंदिरों में क्या तुन नहीं कर रहे हो? क्या तुम गुरुकुल खोलने के स्थान पर अंग्रेजी शिक्षा के आधुनिक स्कूल खोलने पर अपनी ऊर्जा नहीं लगा रहे हो?

१५. जिन दैनिक यज्ञ आदि पांच महायज्ञों को प्रतिदिन न करने वालों को कृतघ्न और पापी कहा जाता है, क्या तुमने उन यज्ञों को त्याग नहीं दिया?

१६. क्या तुम आधुनिकता की होड़ में आश्रमों व गुरुकुलों में मेरे द्वारा प्रतिपादित पाठ्यक्रमों को तिलांजलि नहीं दे रहे हो?

१७. मैंने सुना है प्रतिदिन लाखों गायों की हत्या यहां पर हो रही है। क्या तुमने कभी उसका प्रतिवाद किया? क्या प्रतिदिन तुम ''गो माता की जय हो'', ''गाय की रक्षा हम करेंगे,'' नारे लगाकर मुझे धोखा नहीं दे रहे हो? क्या तुम्हारे घर में तुम और तुम्हारे बच्चे गाय का दूध सेवन करते हैं? क्या गोशालाओं

में कभी तुमने सहयोग किया ? क्या तुम स्वयं बूढ़ी गाय को थोड़े से धन के लालच के लिए कसाइयों के हाथ नहीं बेच देते हो ?

१८. जिस मूर्ति-पूजा का विरोध करने के कारण और किसी लोभ में न पडकर मैं विरोधियों का कोपभाजन बना हूं, क्या तु आर्यसमाज मन्दिरों में मेरी ही मूर्ति पर हार नहीं चढ़ाने लगे हो ? और तो और थोड़े से धन के लालच में कुछ धनपतियों को जिन्हें तुम जानते हो कि ये मूर्तिपूजक हैं, फिर भी उन्हें आर्यसमाज के पदाधिकारी बनाकर अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को शान्त नहीं कर रहे हो ?

१९. जिन मांस-भक्षकों के घर पर पानी पीने से भी मैंने मना किया था, क्या तुम उन्हीं मांसाहारियों और शराबियों को मालायें पहनाकर समाज के सदस्य बनाकर आर्यसमाज को क्लब बनाने का प्रयास नहीं कर रहे हो ?

२०. पचास वर्ष की आयु के पश्चात् वानप्रस्थ और ७५ वर्ष की आयु के पश्चात् संन्यास आश्रम की दीक्षा लेकर समाज की सेवा का जो संकल्प मैंने तुम्हें वेदानुसार बताया था, क्या तुम ने उस के पालन मे जरा भी रुचि दिखाई ?

२१. अपने जीवन में साधना, स्वाध्याय की बजाय जीवन भर धन कमाने, भौतिक सुविधाओं, वासनामय जीवन व्यतीत करना, क्या तुमने अपने जीवन का उद्देश्य नहीं बना रखा है ?

२२. सन्ध्या के छः मन्त्रों (मनसा परिक्रमा मन्त्र) में ''यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः'' को प्रातः सायं तोते की तरह रटते तो तुम रहे, क्या तुमने ईर्ष्या-द्वेष के भाव को दूर किया ?

२३. जो मैंने तुम्हें आर्यसमाज के माध्यम से श्रेष्ठतम विचारों का चिन्तन दिया था क्या तुमने उसे बहुत संकीर्ण एवं सीमित नहीं कर दिया है ? क्या तुमने आर्यसमाज मन्दिरों को जलसे, जलूसों व लंगरों तक सीमित नहीं कर दिया ?

२४. क्या तुम किसी व्यक्ति की मृत्यु पर मृतक व्यक्ति के वजन के बराबर घी और सामग्री डालने की बजाये एक या आधा किलो घी और आधा या एक किलो सामग्री डालकर मृतक के शव को अग्नि के अर्पित नहीं कर रहे हो ?

२५. क्या तुम चौथे के दिन मृतक की अस्थियां अलग कर और राख अलग कर हरद्वार ले जाने का काम नहीं कर रहे हो ? जिस हरद्वार को मैंने हाड का द्वार कहा था क्या तुम उसी हरद्वार में अस्थियां ले जाकर पण्डे-पुजारियों के हाथों नहीं लुट रहे हो।

२६. श्रद्धांजलि दिवस के अवसर पर क्या तुम मृतक के चित्र पर माला नहीं चढ़ा रहे हो ? उसके चित्र के सामने फूल रखकर लोगों से मूर्तिपूजा नहीं करा रहे हो ? किसी देवी-देवता एवं मृतक के चित्र को रखकर उन पर पैसे नहीं चढ़वा रहे हो ? यदि ऐसा कर रहे हो तो क्या तुम मेरी हत्या नहीं कर रहे हो ?

२७. क्या तुमने अपने बच्चों की जन्मपत्रियां बनवानी प्रारम्भ नहीं कर दी ? जिन जन्मपत्रियों को मैंने शोकपत्री कहा था उन्हीं जन्मपत्रियों को बनवा कर क्या तुम ढ़ोंग और पाखण्ड में फंसते नहीं जा रहे हो ? क्या तुमने अपने बच्चों को आर्य संस्कारों से संस्कारित किया ?

२८. तुम सदैव तो अपने आप में आर्यसमाज का लबादा ओढ़े रहे हो परन्तु उस समय तुम्हें क्या हो जाता है जब तुम अपने किसी बच्चे का विवाह करने जाते हो तो मुहूर्त पूछते रहते हो। ज्योतिषियों के चक्कर में पड़कर क्या तुम अपने बच्चों को भविष्य खराब नहीं कर रहे हो ?

२९. अब तो तुम अपने पुत्र/पुत्री के गुण और जहां उनका विवाह करना हो उस की पुत्री/पुत्र के गुण की अपेक्षा जन्मकुण्डली मिलाने लगे हो। क्या यह पाखण्ड की पराकाष्ठा नहीं है ?

३०. कोई भी जीव इस संसार में आता है वह अपने कर्म साथ लाता है परन्तु तुम उस विवाह के समय पाखण्डी पण्डितों के कहने से मंगली, मंगला आदि कह कर उन बच्चों के जीवन के साथ खिलवाड़

नहीं करते हो?

३१. मैंने सत्यार्थप्रकाश में विवाह के समय पुत्र और पुत्री के लिए कौन-कौन सी सावधानियां बताई थी? माता और पिता की कई पीढियां छोड़कर विवाह करने की बजाय तुमने अपने बच्चों के विवाह अत्यधिक निकट सम्बन्धियों के साथ करने प्रारम्भ नहीं कर दिये हैं?

३२. मैंने तुम्हे अपनी संतानों में अच्छे-अच्छे संस्कार डालने की प्रेरणा की थी, क्या तुमने कभी अपने बच्चों को धर्म, कर्म की बात, आचार व्यवहार की बात, राष्ट्र प्रेम से सम्बन्धित वीरों की गाथायें सुनाने का प्रयास किया? यदि नहीं तो क्या तुमने मेरे साथ विश्वासघात नहीं किया? तुमने उनके हाथों में वैचारिक क्रांति के भाव भरने की बजाय उन के हाथों में मोबाइल, लैपटाप, टेबलेट दे दी जिस से वह इनके लाभों की बजाय इसमें छिपी गन्दगी देख देखकर अपने ब्रह्मचर्य का नाश कर रहे हैं? कभी इस पर विचार किया?

३३. मैंने तुम्हें अन्तर्जातीय विवाह करने का आदेश दिया था परन्तु सोचो कि क्या तुम जाटवाद, अहीरवाद, बनियावाद, पंजाबीवाद आदि आदि वादों में नहीं पड़ गये हो? क्या तुम विवाह के समय गुण, कर्म, स्वभाव देखने की बजाय जातिवाद को महत्त्व नहीं देने लग गये हो।

आर्य जी,

क्या आज आर्यसमाज के अधिकांश लोग मेरे नाम को व्यापार बनाकर धन बटोरकर मौज मस्ती नहीं ले रहे हैं? आर्यसमाज मन्दिरों की दशा, वातावरण व परिस्थिति देखकर दु:ख होता है। क्या मेरे किए हुए कर्मों का प्रतिदान यही है? क्या यही स्मरण है? क्या यही श्रद्धांजलि है? यदि यही है तो आर्यो! मुझे क्षमा करो! मुझे यह आशा न थी जिस रूप में आज आर्यसमाज है और जिस दिशा में जा रहा है, इसका यह हाल होगा। मैं लज्जित होकर अपनी आंखें धरती में गाड़े हुए था क्योंकि जो भी प्रश्न स्वामी दयानन्द जी ने उठाये थे वह सब सत्य थे, मेरे पास कोई उनका उत्तर नहीं था। मुझे अधिक परेशानी की स्थिति में देखकर स्वामीजी एक बार पुन: मुस्कराये और कहने लगे निराश होने की कोई बात नहीं। निराशा से कुछ नहीं मिलेगा आज और अभी यह निर्णय करो कि मैं स्वय सुधरने का प्रयास करूंगा। पूरे परिवार को सुधारूंगा, तो वह दिन दूर नहीं जब मेरी वेदरूपी ज्वाला एक बार मशाल बनकर संसार का कल्याण करेगी। यह कहते ही वह उठे और बाहर चले गये। मेरी आंखों में आंसू थे। इतनी देर में श्रीमती जी आती हैं और कहती हैं कि उठिये प्रात:काल के 5 बजे हैं, कब तक सोते रहोगे?

मैं चौंक उठा। अरे! यह क्या? यह तो एक स्वप्न था परन्तु इस स्वप्न को मैं अपनी सम्पत्ति बना कर संजाये रखना चाहता हूं। स्वप्न में ही सही, जो प्रश्न स्वामी दयानन्द जी ने मुझ से किये? उनके अनुसार मैं अपने जीवन में कुछ परिवर्तन ला सकूं इसी विश्वास के साथ मैं उठा और दैनिक कार्यों में व्यस्त हो गया।

मैं सोचने लगा कि आज का यह स्वप्न बनकर रह जायेगा या मैं अपने में कुछ परिवर्तन भी लाऊँगा। यदि मैं अपने जीवन में इन उठाये हुए प्रश्नों का उत्तर ढूंढ सका और आर्यसमाज के कार्य में बदलाव ला सका तो मैं अपने जीवन को सार्थक बना सकूंगा। मुझे अनुभव हुआ कि यह केवल मेरा स्वप्न नहीं बल्कि उन सभी निष्ठावान् आर्यों की एक पीड़ा है जो मेरे स्वप्न के माध्यम से सामने आई है। प्रभु से प्रार्थना है कि हमें इतनी शक्ति दे कि हम आर्यजन इनमें से कुछ प्रश्नों का उत्तर ढूंढ सकें। ताकि हम आर्यसमाज के लिए समस्या नहीं समाधान बन सकें और आर्यसमाज को स्वामी दयानन्द सरस्वती के स्वनों का संगठन बनाये रख सकें।

भारत पाक युद्ध १९७१ के अनुभव

O मेजर रत्नसिंह यादव

तनिक-सी सावधानी और तनिक-सी असावधानी के दूरगामी परिणाम इतिहास में ऐसे अनेक अवसरों का वर्णन है जब सेनापति या राजा की छोटी-सी भूल ने युद्ध का पूरा पासा ही पलट दिया और हाथ आती-आती विजय पराजय में बदल गई और उस पराजय का दुष्परिणाम तत्कालीन शासक और प्रजा ने तो भोगा ही, साथ ही आने वाली शताब्दियों तक भी पराजित प्रजा भोगती रही। राणा सांगा तथा बाबर का युद्ध, हेमचन्द्र विक्रमादित्य तथा अकबर का युद्ध इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

ऐसे परिणाम का प्रभाव या दुष्प्रभाव, सावधानी या असावधानी करने वाले व्यक्ति के पद तथा कार्यक्षेत्र के अनुसार ही व्यापक या अल्प-व्यापक होगा। ऐसा ही व्यक्तिगत अनुभव मैंने १९७१ ई. के भारत-पाक युद्ध के दिनों में किया और देखा।

३ दिसम्बर १९७१ की रात। जम्मू के साम्मा क्षेत्र से पाकिस्तान के सकरगढ़ क्षेत्र में हमारी सेना की एक टैंक रेजिमेंट ने 'जाट बलवान्-जय भगवान्' के नारे के साथ रात्रि में प्रवेश किया। हम शीघ्रता करते हुए पाकिस्तान के क्षेत्र में १७ मील तक घुस गये तथा चक अमरू आदि तीन रेलवे स्टेशनों और बीसियों गांवों पर कब्जा कर लिया। १९७० से पूर्व चकअमरू रेलवे स्टेशन से आगे जम्मू तक रेलवे लाइन जाती थी। मेरा कार्यभार था-दो गाड़ी गोला बारूद, दो गाड़ी डीजल-पैट्रोल, एक गाड़ी में शक्करपारा, नमकीन दाल जैसा सूखा भोजन तथा पानी का एक छोटा टैंकर ट्राला दिन में तैयार करके सायंकाल के अन्धेरे में चलकर रेजिमैंट तक हर-हालत में समय पर पहुंचना। सभी गाड़ियों को १०-१० गज के अन्तर पर रहकर एक-साथ चलने का नियम था। १७ मील का ऊबड़-खाबड़ रास्ता बिना लाइट जलाये पार करना होता था।

बेस कैम्प से सबसे आगे गोला-बारूद, फिर डीजल-पैट्रोल, फिर भोजन तथा अन्तिम गाड़ी पानी के ट्रेला वाली चलने के लिए तैयार थी। मेरा आदेश मिलते ही सभी गाड़ियां यथाक्रम चल पड़ी। जब कुछ दूर चले गये तो मैंने अन्धेरे में चैक करते हुए देखा कि पानी वाली गाड़ी के पीछे पानी का ट्राला तो ही नहीं। मैंने दौड़कर सबसे आगे वाली गाड़ी को रुकवाया।

पानी के ट्रेले वाली गाड़ी के ड्राइवर का नाम सूरजभान था जो ढाकला (झज्जर) के निकट किसी गांव का निवासी था। मैंने उससे पूछा-पानी का ट्रेला कहाँ है? वह गाड़ी से नीचे उतरते हुए बोला-पीछे तो लगा हुआ है। पीछे जाकर देखा तो ट्रेला नहीं पाया-बेचारा हैरान परेशान हो गया। बोला-सर! अभी कुछ देर पहले ही पानी भर कर लाया था, कहां गया? क्या बताऊं? कुछ समझ में नहीं आ रहा।

मैंने अनुमान लगाया कि अवश्य ही वाटर प्वाइंट से यहां तक के ऊबड़-खाबड़ रास्ते में हिचकोले खाती गाड़ी के पीछे से ट्राला उचक कर निकल गया होगा और सूरजभान को पता नहीं लगा होगा। आगे वाली सभी गाड़ियाँ को रुकने का आदेश देकर मैंने सूरजभान से कहा वापिस जाओ, उसी रास्ते में कहीं इधर उधर ट्रेला मिल जायेगा, उसे लेकर तुरन्त वापिस आओ। सूरजभान ने कहा-सर! मुझे गोली मार दो, पर मैं अकेला नहीं जाऊंगा। मैंने भी सोचा कि यह अन्धेरे में अकेला ट्रेला नहीं ढूंढ पायेगा। अत: मैं उसे साथ लेकर चला। हमारे सौभाग्य से लगभग दो मील की दूरी पर झाड़ियों में ट्रेला मिल गया। वापिस आकर सभी गाड़ियों को चलने के लिए आदेश दिया।

देर हो जाने के कारण रेजिमेंट से रेडियो द्वारा सूचना आ रही थी कि अभी तक गाड़ियां क्यों नहीं पहुंची। मैंने अपने स्कवाड्रन कमाण्डर मेजर महेन्द्रसिंह शेरगिल को बताया-सर! कुछ समस्या थी, गाड़ियां पहुंचने वाली हैं। युद्ध में देरी का मतलब है मौत को निमन्त्रण देना। केवल अपनी ही नहीं,

अपितु, अपने साथियों की भी। समस्या की पूरी कहानी बताने का न तो मेरे पास समय था और न मेजर शेरगिल के पास सुनने का। खैर! गाड़ियां पहुंच तो गई, कुछ देर से ही सही।

यदि मैं सिर्फ गाड़ियों को चलने भर का आदेश देकर पानी के ट्रेले की ओर ध्यान न देता तो सूरजभान बिना पानी के ट्रेले के गाड़ी ले जाता और स्काड्रन के सभी जवान २४ घण्टे तक बिना पानी के रह जाते। युद्ध की तनावपूर्ण स्थिति में प्यास कुछ ज्यादा ही लगती है।

ध्यान रखने का यह छोटा-सा उदाहरण है।

सैनिकों के घरों से आने वाले पत्र भी बेस कैम्प में ही फील्ड पोस्ट आफिस से मिलते थे। मुझे यह भी आदेश था कि सैनिकों की चिट्ठियां भी राशन-पानी वाली गाड़ी में भेज दी जाया करें। ऐसे अनेक पत्रों में एक पत्र दफेदार इन्द्रसिंह का भी था। यह दफेदार इन्द्रसिंह रेजिमैंट का एक अच्छा तगड़ा सुन्दर पहलवान था। यह रोहतक जिले के ही किसी गांव का निवासी था। पत्र इसकी पत्नी ने भेजा था। उस समय युद्ध दिन में कम किन्तु रात्रि में ज्यादा होता था। पत्र रात्रि को मिला था, पढ़ते कैसे ? युद्ध चल रहा था। दूसरे दिन दफेदार इन्द्रसिंह का टैंक कीकर के प्रेड़ों के नीचे खड़ा था, शत्रु के टैंक लगभग ७००-८०० गज की दूरी पर खड़ थे। इन्द्रसिंह ने टैंक के कपोले को खोलकर कुछ प्रकाश में पत्नी के पत्र को पढ़ना चाहा। शायद कुछ ही पंक्तियां पढ़ पाया होगा कि शत्रु ने फायर कर दिया। गोला कीकर के पेड़ की टहनियों से टकराया और एक टुकड़ा दफेदार इन्द्रसिंह के सिर के पिछले भाग से टकराया और यह घातक सिद्ध हुआ। इन्द्रसिंह को प्राणों से हाथ धोना पड़ा।

सायंकाल होते ही जीप ड्राइवर शीशराम ने खुली जीप में इन्द्रसिंह के शव को अपनी लुंगी से बांधकर रात के अन्धेरे में बेस कैम्प में अन्तिम संस्कार के लिए छोड़ गया और तुरन्त वापिस मोर्चे पर चला गया। मुझे रात में ही अन्तिम संस्कार की व्यवस्था करनी थी। शव को एक टैण्ट में रखवाया। मेरे पास केवल ५-६नये रिक्रूट (सैनिक) ही थे। मथुरा निवासी पूर्णसिंह नामक नया सैनिक सन्तरी की ड्यूटी पर था। वह शव को देखकर डरने लगा। मैंने उसे बहुत समझाया, पर वह भयभीत ही रहा। मैं शव के अन्तिम संस्कार की तैयारी के साथ-साथ भयभीत सैनिक को भी सम्भालता रहा। प्रात: काल ५-६ बजे तक सब कुछ निपटाना था, क्योंकि दिन में हवाई आक्रमण का अधिक भय था। धर्मगरु पंडित जी तथा ग्रन्थी को बुलाकर इन ५-६ लोगों ने नाले के किनारे दफेदार इन्द्रसिंह का अन्तिम संस्कार कर दिया। ग्रन्थी जी ने जब इन्द्र का मुख देखा तो उनके मुख से निकले शब्द 'किड्डा सोहणा जवान सी' मेरे कानों में अभी तक ज्यों के त्यों गूंज रहे हैं। तीसरे दीन अस्थियां चुनी गई और एक थैली में बन्द करके टैण्ट में टांग दिये। युद्ध की समाप्तिपर इन्द्र के स्थान पर उसकी अस्थियां गंगा में प्रवाहित करने के लिए उसके घर पर भेज दी गई।

पत्रलेखिका पत्नी, इन्द्र तक पत्र पहुंचाने वाले हम सब को तथा स्वयं इन्द्र को भी क्या पता था कि यह पत्र नहीं, किन्तु मौत का पैगाम सिद्ध होगा। पत्र पढ़ने के लिए टैंक से सिर बाहर निकालने की थोड़ी-सी असावधानी इन्द्र को तथा उसके परिवार को कितनी भारी पड़ी, यह घटना उसका उदाहरण है।

फिर अन्त में यह भी सोचते हैं कि हम कितनी ही सावधानी रखें, किन्तु पूर्व कर्मानुसार जो फल मिलना होता है, वह किसी-न-किसी रूप में हमें मिल ही जाता है।

इस लेख में पूर्व चर्चित मेजर महेन्द्रसिंह शेरगिल बाद में लेफ्टिनेंट जनरल के पद से सेवा निवृत्त हुए, उन्हें VRC. से सम्मानित किया गया। उनके पिता मेजर जनरल राजेन्द्रसिंह 'स्पेरो' को १९४८ ई. तथा १९६५ के युद्धों में दोनों वार MRC से अलंकृत किया गया। बीर पिता का पुत्र भी निस्सन्देह वीर ही निकला॥

-जखाला (गुडियाणी) रेवाड़ी

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

जब मैं स्वतन्त्रता-सेनानियों की सुदीर्घ श्रृंखला पर दृष्टिपात करता हूं तो सुभाषचन्द्र बोस का नाम मेरी दृष्टि को सर्वाधिक आकर्षित करता है। नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ऐसी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे, वे त्याग, तप, बलिदान, ईश्वरभक्ति एसं देशभक्ति की प्रतिमूर्ति थे। जो लोकप्रियता नेता जी को प्राप्त हुई वैसी कदाचित् ही किसी अन्य नेता को प्राप्त हुई हो। स्वाभिमान और आत्मसम्मान की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। वे परम उत्साही, अदम्य वीर और उद्‌भट राजनीतिज्ञ थे। वे ऐसे नरपुंगव थे कि आज भी उस महान् पुरुष का नाम लेते ही करोड़ों भारतीयों का सिर श्रद्धा से झुक जाता है।

वीरशिरोमणि नेता जी का जन्म २३ जनवरी सन् १८९९७ ई० को बंगाल के चौबीस परगना जिले के कोड़ोलिया नामक गांव में हुआ था। उनके पिता श्री जानकीनाथ जी कटक में सरकारी वकील थे तथा अंग्रेज सरकार ने उन्हें राय बहादुर की उपाधि से सम्मानित किया था। सुभाष की कुशाग्र बुद्धि को देखकर उनके पिता उसे आई.सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण करने की प्रेरणा देते थे। पिता का मन रखने के लिए सुभाष ने आई.सी.ए की परीक्षा उत्तीर्ण तो करली परन्तु अंग्रेज सरकार द्वारा प्रदत्त नौकरी को ठुकरा दिया। ऊंची नौकरी और विवाह करके भोग विलास का संकीर्ण जीवन व्यतीत करना उनके उदार और महान् मन को स्वीकार नहीं था। इसीलिए सांसारिक जाल से विरक्त होकर विद्यार्थी काल में ही एक बार स्वामी दयानन्द की भाँति सत्य की खोज के लिए एक दिन चुपके से घर से भाग निकले थे और पहाड़ों और जंगलों में मारे-मारे फिरने लगे थे। कुछ दिन तक उनका मन वैराग्य और देशभक्ति के मध्य दोलायमान रहा और अन्त में उन्होंने राष्ट्र और मानवता की सेवा करने का ही संकल्प लिया।

उनकी तीव्र बुद्धि ने यह समझ लिया था कि गोरे अंगेजों ने ही लूट-लूट कर ही इस विश्व शिरोमणि भारत देश को दीन-हीन बना डाला है। इसलिए सुभाष ने अंग्रेजों को भारत से निकालने का दृढ लक्ष्य बनाया। भारतमाता की पराधीनता की बेडियों को काटने के लिए आपका मन बेचैन था। आपके स्वाभिमानी व्यक्तित्व का नमूना विद्यार्थी काल में ही दिखाई दे गया था। जब आपने कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कालेज में पढ़ते हुए ओटन नामक अंग्रेज प्रोफेसर के द्वारा भारतीयों के लिए अपमान-जनक शब्द कहने पर उसके मुंह पर तमाचा मारकर बदला लिया था। १८५७ के स्वतन्त्रता-संग्राम के बाद अंग्रेज के मुंह पर भारत का वह पहला तमाचा था जिसने अंग्रेजों के घमड़ को चूर-चूर कर दिया था।

जब सुभाष विदेश में अध्ययन कर स्वदेश वापिस आए तो क्रान्ति का बिगुल बज चुका था। सम्पूर्ण देश अपनी मुक्ति के लिए दृढ़संकल्प था। अंग्रेजों के रोल्ट एक्ट के पास हो जाने से देश तड़प रहा था। जन्मभूमि भारत देश को इस प्रकार तड़पते देखकर सुभाष का रोम-रोम क्रान्तिकारी हो उठा। देश बन्धु चितरंजन दास से मिलकर सुभाष ने करोड़ों राष्ट्रीय स्वयं सेवक बनाने का अभियान छेड़ दिया, परिणामस्वरूप आपको जेल जाना पड़ा। जेल को वे अपना पुरस्कार समझते थे, बाहर आकर दुगुने जोश से कार्य करते थे। 1938 में पट्टाभि सीतारमैय्या को हराकर आप कांग्रेस के अध्यक्ष बने। गांधी जी ने इसे अपनी हार माना। आपने देश के लिए इतना कार्य किया कि दोबारा भी आपको अध्यक्ष बनाया गया। परन्तु आपस की बढ़ती हुई कटुता के कारण आपने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया और एक अलग संगठन बना लिया जिसका नाम फारवर्ड ब्लाक रखा।

सुभाष का मन आजादी के लिए चंचल था इसलिए विदेश में जाकर आजाद हिन्द सेना का संचालन किया। अपने सेनानियों को सम्बोधित करते हुए कहा था " -आजाद सेना के आजाद सेनानियो! मातृभूमि बलिदान चाहती है, वह चाहती है विद्रोही सैनिक विद्रोही सेनापति-जो शत्रु को नष्ट करने के लिए अपने खून की होती खेल सके। देशभक्तो! तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा। हमारा अभियान तब शान्त होगा जब हमारी आजाद फौज दिल्ली के लाल किले पर तिरंगा झण्डा फहरादेगी।

ऐसे अमरसेनानी को उनकी एक सौ अठारहवीं जन्मशताब्दी पर गर्व के साथ स्मरण करना प्रत्येक भारतवासो का पुनीत कर्त्तव्य है। जो जाति अपने महान् राष्ट्रवादी पुरुषों के मार्गदर्शन को याद नहीं करती वह कभी उन्नति नहीं करती। कवि उनको स्मरण करता हुआ कहता है।

वह क्रान्तिदूत भारत सपूत, वह पत्थर था, वह पानी भी,
वह परमवीर पौरुष सुधीर, वह मानी था बलिदानी भी।
संसार नमन करता जिसको, ऐसा कर्मठ युग चेता था।
अपना सुभाष, जग का सुभाष, भारत का सच्चा नेता था।

लेखक-डॉ० जगदेव विद्यालंकार, पूर्व प्राचार्य
६६७-ए/२९ तिलकनगर, रोहतक

समाचार प्रभाग

द्वेषानल से पार

प्रीति रीति की नीति पढ़ा दो।
द्वेष हटा प्रभु प्रीति बढ़ा दो॥
पार करो प्रभु द्वेषानल से।
जैसे करते नौका जल से।
सज्जन से शत्रुता नहीं हो,
बचे रहें हम दुर्जन-दल से।
श्रुतिश्रद्धा शिव कवच चढ़ा दो।
द्वेष हटा प्रभु प्रीति बढ़ा दो॥१॥
सर्वत्र तुम्हारे मुखमण्डल।
देश रहे दृग अरिदल-दंगल।
द्वेष दिशा से हमें बचा कर,
ईश बनाओ जीवन मङ्गल।
स्वस्ति सात्विक चित कढ़ा दो।
द्वेष हटा प्रभु प्रीति बढ़ा दो॥ २॥
अध अनाचार कुविचार न हों।
शालीनताहीन व्यवहार न हों।
हो जाय पाप का सर्वनाश,
उपकार करूँ अपकार न हों।
कर्म कृपा की ढाल मढ़ा दो।
द्वेष हटा प्रभु प्रीति बढ़ा दो॥ ३॥

स्रोत-द्विषो विश्वतो मुखाति नावेव पारय।
अप नः शोशुचदघम्॥ अथर्वः ४.३३.७.॥

देवनारायण भारद्वाज
'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) M.I.G फ्लैट-४५
रामघाट मार्ग, अलीगढ़ 202001 (उ.प्र)

ईश्वर जो करता है......

ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है।
मानव तू असमंजस में, नाहक ही डरता है॥
अजर अमर अजन्मा ईश्वर, सर्वशक्तिमान है,
जड़ चेतन का रक्षक और सर्वत्र विद्यमान है।
माता-पिता की भांति सबकी रक्षा करता है॥ १॥
मानव तू...
न्यायकारी निष्पक्ष दयालु, सब पर मेहरवान है,
कर्म करे वैसा फल पावे, उसकी महिमा महान है।
जगत पिता कहलाता और सबकी रक्षा करता है। २।
मानत तू...
जल में थल में नभ में, जो जीव विचरते हैं,
वन उपवन पर्वत घाटी में पुष्प निखरते हैं।
अन्न जल और वायु देकर सबका पालन करता है। ३।
मानव तू...
कीड़ी को कन हाथी को मन, खाने को देता है,
सब का रखता ध्यान सदा, नहीं बदले में लेता है।
चट्टानों के भीतर भी वह सृष्टि रचता है। ४।
मानव तू...
गरमी सर्दी वर्षा आंधी, आते रहते हैं,
दिन और रात की भांति, सुख दुःख जाते रहते हैं
जिसने भी जन्म लिया, वह एक दिन मरता है। ५।
मानव तू...
सूर्च चन्द्र नक्षत्र और नभ के सब तारे,
पारावार नहीं मिला प्रभु का थक कर सब हारे।
परम शान्ति उसे मिले, जो स्मरन करता है। ६।
मानव तू...
पुण्य कर्मों के कारण ही, मानव नर तन पाता है,
मृगमरीचिका में फंस कर इसको, व्यर्थ गंवाता है।
ईश्वर कृपा होने पर ही वह, भवसागर से तरता
है। ७। मानव तू...
पूर्ण समर्पित होकर जो, ईश्वर को ध्याता है,
परम शान्ति मिले उसे और परमपद पाता है।
मनुष्य रूप में ही प्रभु, सब कर्तव्य करवाता है। ८।
मानव तू असमंजस में, नाहक ही डरता है।

देशराज आर्य ०९४१६३३७६०९
म.क. 725 सैक्टर-4, रेवाड़ी

हमारी विशिष्ट औषधियाँ

संजीवनी तैल

यह तैल घाव के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुए घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भरकर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों में और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है।

मूल्य : ५०-०० रुपये

च्यवनप्राश

शास्त्रोक्त विधि से तैयार किया हुआ स्वादिष्ट सुमधुर और दिव्य रसायन (टॉनिक) है। इसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खांसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक तथा सभी हृदयरोगों की उत्तम औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका निरन्तर सेवन समूल नष्ट करता है। निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है। च्यवन ऋषि इसी रसायन के सेवन से जवान होगये थे।

मूल्य : १ किलो २२५ रुपये

नेत्रज्योति सुर्मा

सुर्मे तो बाजार में पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं परन्तु इतना लाभप्रद और सस्ता सुर्मा मिलना कठिन है। इसके लगाने से आंखों के सब रोग जैसे आंखों से पानी बहना, खुजली, लाली, जाला, फोला, नजर की कमजोरी आदि विकार दूर होते हैं तथा बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। दुखती आंखों में भी इसका प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है।

मूल्य : ३०-०० रुपये

बलदामृत

हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आजाता है। पीनस (सदा रहनेवाला जुकाम और नजले) की औषधि है। वीर्यवर्धक, कासनाशक, राजयक्ष्मा, श्वास (दमा) के लिए लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करता है तथा अत्यन्त रक्तवर्धक है।

मूल्य : १३०-०० रुपये

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर

हमारे प्रमुख प्रकाशन

१. व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२. अष्टाध्यायी (पाणिनि)	१५-००
३. कारिकाप्रकाश (सुदर्शनदेव)	२०-००
४. लिङ्गानुशासनवृत्ति (सुदर्शनदेव)	१५-००
५. फिट्सूत्रप्रदीप (सुदर्शनदेव)	१०-००
६. छन्दःशास्त्रम् (व्रतिमंगलावृत्ति)	४५-००
७. काव्यालकारसूत्राणि (व्रतिमंगलावृत्ति)	२५-००
८. निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (चन्द्रमणि)	२५०-००
६. योगार्यभाष्य (आर्यमुनि)	२०-००
१०. सांख्यार्यभाष्य (आर्यमुनि)	४०-००
११. मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१२. वैशेषिकार्यभाष्य (आर्यमुनि)	६०-००
१३. न्यायार्यभाष्य (आर्यमुनि)	१००-००
१४. वेदान्तार्यभाष्य (आर्यमुनि)	१२०-००
१५. महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१६. अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग)	६५०-००
१७. छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (शिवशंकर)	२५०-००
१८. वृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यम् (शिवशंकर)	१५०-००
१६. उपनिषत्समुच्चय (पं० भीमसेन)	१००-००
२०. ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
२१. मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प	३०-००
२२. दयानन्दप्रकाश (स्वा० सत्यानन्द)	५०-००
२३. धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	८०-००
२४. वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२५. देशभक्तों के बलिदान	१२५-००
२६. सत्यार्थप्रकाश (दयानन्द)	२००-००
२७. स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान	४०-००
२८. यजुर्वेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	१००-००
२६. सामवेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	८०-००
३०. अथर्ववेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	३५०-००
३१. ऋग्वेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	३५०-००
३२. सामवेद पदसंहिता	२५-००
३३. ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३४. सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३५. महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३६. घर का वैद्य (१-५ भाग)	१००-००
३७. दैनंदिनी (सत्यव्रत)	२५-००
३८. ब्रह्मचर्य के साधन (१-११ भाग)	६०-००
३६. संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
४०. संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
४१. स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१२००-००
४२. दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
४३. विरजानन्दचरितम् (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
४४. रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४५. महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	४५०-००
४६. स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2014-16

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103

ग्राहक संख्या

श्री ______________________

स्थान ______________________

डा० ______________________

जिला ______________________

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।